अनारको के आठ दिन

सत्यु

चित्रकार
चंचल

राजकमल प्रकाशन

मूल्य : ₹ 95

पहला संस्करण : 1994
चौथा संस्करण : 2018

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com
ई-मेल : info@rajkamalprakashan.com

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

ANARKO KE AATH DIN
by Satyu

ISBN : 978-81-7178-374-8

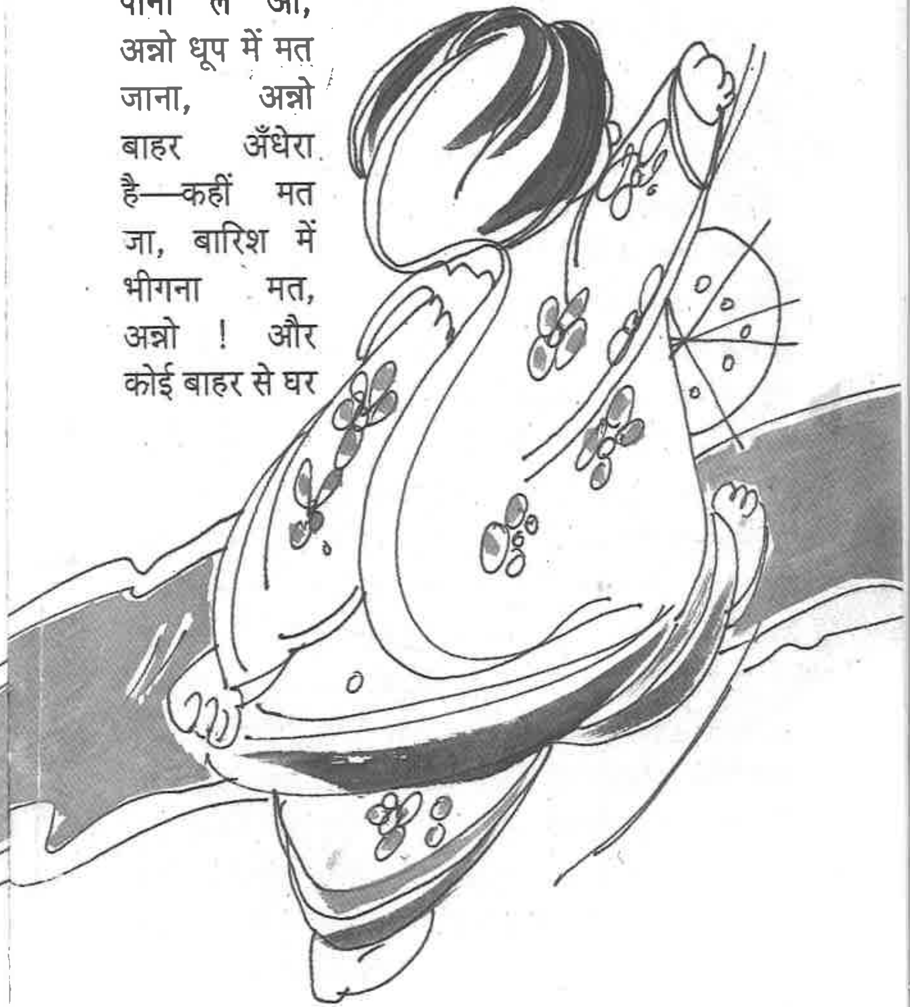
क्रम

अनारको का पहला दिन

अनारको एक लड़की है। घर में लोग उसे अन्नो कहते हैं। अन्नो नाम छोटा जो है, सो उस पर हुक्म चलाना आसान



होता है। अन्नो, पानी ले आ, अन्नो धूप में मत जाना, अन्नो बाहर अँधेरा है—कहीं मत जा, बारिश में भीगना मत, अन्नो ! और कोई बाहर से घर

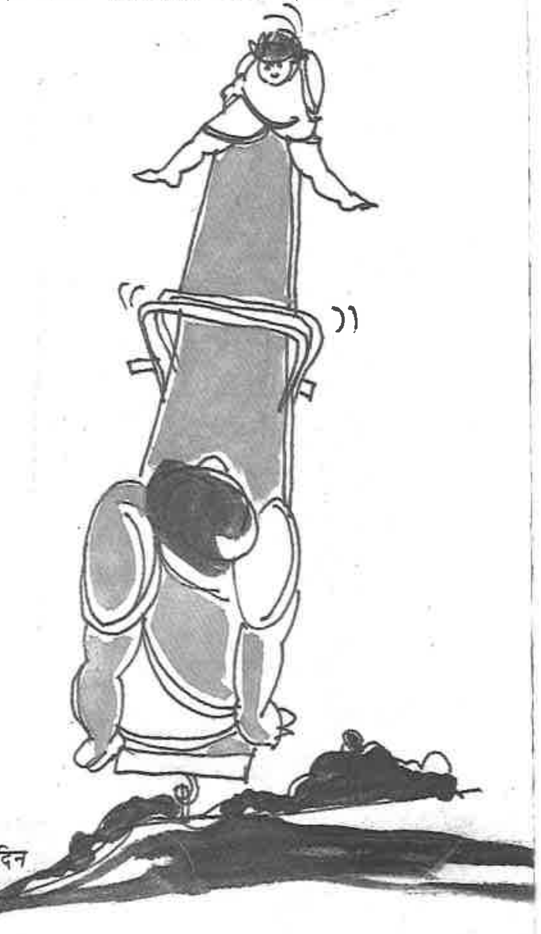


में आए तो घरवाले कहेंगे—ये हमारी अनारको है, प्यार से हम इसे अन्नो कहते हैं। प्यार··· हुँ-ह-ह !

आज अनारको का मूड खराब है। सुबह-सुबह माँ ने बिस्तर से उठा दिया और कहा कि ये लोटा ले और मंदिर में ठाकुर जी को जल चढ़ा आ। अनारको ने पूछा कि ठाकुर जी को जल क्यों चढ़ाएँ ? तो माँ ने कहा, "ठाकुर जी को जल चढ़ाने से वह खुश होते हैं।" अनारको ने पूछा, "ठाकुर जी को खुश क्यों करना ?" तो माँ ने जरा जोर से कहा, "ये भीं कोई पूछने की बात हुई ? चल उठ, और मंदिर जा।" अनारको ने समझाते हुए पूछा, "अच्छा, ठाकुर जी क्या सिर्फ मंदिर में ही रहते हैं ?" अम्मा को मौका मिला और झट कहने लगीं, "बेटी, ठाकुर जी तो हर जगह रहते हैं—पत्थरों में, पेड़ों में, घर में, दीवार में, सड़क पर, खेत में और पता नहीं कहाँ- कहाँ।" इस पर अनारको ने कहा, "फिर मैं लोटे का यह पानी बाहर भिंडी के पौधों में डाल आऊँ ?" माँ ने इस पर कुछ नहीं कहा। खींचकर उसे बिस्तर से उतारा और जमा दी चपत। सो अनारको लोटे में पानी लेकर निकल पड़ी। वह जानती थी कि वह क्या करनेवाली है ! गली के छोर तक, जहाँ तक अम्मी उसे जाते देख सके, वह सीधी जाएगी, फिर अचानक मुड़ जाएगी और लोटे का पानी कहीं भी उलटकर घूमने निकल जाएगी। सो वह सीधी निकल गई और किया

भी वही ! रास्ते में और लोग भी लोटा लेकर मंदिर की तरफ जा रहे थे। एक पंडित जी भी जाते हुए दिखे। पंडित जी किसी को समझाते हुए जा रहे थे—"बेटा, भगवान पर भरोसा रखो। वही सबकुछ ठीक कर देगा। उसकी ताकत अपरम्पार है।" अनारको ये तो नहीं समझ सकी कि 'अपरम्पार' क्या होता है, पर इतना जरूर समझ गई कि पंडित जी कह रहे थे—भगवान के पास बहुत ताकत है। बस, यही सोचते हुए चली जा रही थी कि इतने में किंकु दिख गया, बगीचे में। किंकु सेमल के पेड़ के नीचे लेटा हुआ था। अनारको समझ गई कि किंकु को उसके पिता जी ने सुबह-सुबह ट्यूशन पढ़ने भेजा होगा ! पर इधर किंकु तो मजे से ऊपर सेमल के पेड़ को देख रहा था। जरा-सी हवा चलती और सेमल की ढोल से फलों की रुई निकलकर हवा में उड़ती जाती। बंबई के लड्डू-सी गोल-गोल, जैसे बादल हों। अनारको को देखा तो किंकु का चेहरा खिल उठा। अनारको ने उससे पूछा, "क्यों किंकु, क्या यह सच है कि भगवान की बहुत ताकत होती है ?" इस पर किंकु सोचने लगा। सोचता रहा। फिर बोला, "ये तो मालूम नहीं पर मेरी ताकत तेरे से ज्यादा है।" अनारको ने समझ लिया कि किंकु बात बदल रहा है, पर उसने जाने दिया और हँस पड़ी। उसने मन-ही-मन सोचा, पतला-सा किंकु अपनी ताकत की डींग मार रहा है

और वह भी सुबह-सुबह ! सो अनारको ने कहा, "चल जा-जा।" पर किंकु तो अड़ गया। उस तरफ एक झूला बिलकुल सीधा खड़ा था। किंकु ने कहा, "अच्छा चलो वहाँ चलकर सी-सॉ पर बैठें…एक तरफ से उसे तुम दबाओ और दूसरी तरफ से मैं। अपनी-अपनी ताकत लगाकर देखते हैं कि कौन किसको उठा पाता है।"



अनारको झट तैयार हो गई। फिर लगे दोनों दो तरफ से जोर लगाने। अनारको ने खूब जोर मारा, खूब जोर मारा, लंबी साँस खींची, फिर जोर मारा पर किंकुवाला हिस्सा टस से मस ही न हो। जब वह थक गई तो किंकु खिलखिलाने लगा और खूब उछलने लगा। अनारको को कुछ शक-सा

हुआ। अंदर ही अंदर कुछ गड़बड़-सा लगने लगा। कुछ सोचकर उसने कहा, "अच्छा चल किंकु, अब जगह बदलकर करते हैं। तू मेरी तरफ आ जा और मैं तेरी तरफ, और फिर दबाते हैं।"

यह सुनकर तो किंकु की हँसी ही गायब हो गई। उसका उछलना भी कम हो गया। पर मन मारकर जैसे-तैसे वह मान गया। इधर अनारको किंकु की तरफ आई तो क्या देखती है कि जमीन से एक हुकनुमा लोहे की छड़ निकली हुई है जो सी-सॉ के एक छोर में फँसकर उसे ऊँचा नहीं उठने देती। अनारको किंकु की झूठी ताकत का रहस्य ताड़ गई। उसने मन ही मन सोचा, 'अच्छा बेटा, तो ये बात है ! आखिर, तुम्हारा छोर उठे भी तो कैसे !!' असल में जब किंकु दबाता था तो वह हुक उसके पीछे होता था और अनारको को वह नहीं दिखता था। एक, दो, तीन कहकर फिर से दोनों दबाने लगे। फिर क्या था, अनारको ने एक झटका लगाया और किंकु महाराज ऊपर ! ऐसे ऊपर उठकर गिरे कि धूल में घुलटनियाँ खा गए। उठे, तो नाराजी से कहने लगे, "जाओ, हम तुम्हारे साथ नहीं खेलते। हमारी गुलेल लौटा देना शाम को, हाँ !" बस इतना कहा और चल दिए। पर अनारको बैठी रही। उसे जाने की जल्दी नहीं थी, क्योंकि इतना समय तो मंदिर जाने में ही लग जाता। वह

जाकर सेमल के पेड़ के नीचे बैठ गई, जहाँ उसने अपना लोटा छुपाया था। "जब जगह की अदला-बदली की, तभी समझ में आया कि किसकी कितनी ताकत है!" अनारको बुदबुदा रही थी। फिर सामने रंग-बिरंगी तितलियों और सेमल की रुई का उड़ना देखने लगी। फिर अचानक कुछ सोचने लगी और सोचते-सोचते वह एक जगह पहुँच गई।

उस एक जगह के अंदर एक जगह में वह क्या देखती है कि सामने से अम्मी चली आ रही हैं और पीछे-पीछे पिताजी। फिर अम्मी रुक गई तो पिताजी भी रुक गए। अम्मी घूमकर पापा को देखने लगीं। अरे ये क्या—अम्मी तो अम्मी थीं पर देख ऐसे रही थीं पिताजी की तरफ जैसे पिताजी देख रहे हों। और पिताजी तो पिताजी थे, पर देख ऐसे रहे थे अम्मी की तरफ जैसे कि अम्मी हों। अब अनारको को नहीं मालूम, वह किसी को कैसे समझाए। पर उस देखने में ही ऐसा कुछ था कि अम्मी अम्मी होते हुए भी पापा लग रही थीं और पिताजी पिताजी होते हुए भी अम्मी लग रहे थे। अनारको को अटपटा-सा लगा और काफी मजेदार भी। फिर पिताजी मिनमिनाते हुए बोलने लगे, "थक गई होगी बर्तन माँजते-माँजते, बैठ जाओ। मैं चाय बनाकर लाता हूँ।" इस पर अम्मी ने कहा, "छोड़ो जी, मुझे जाना है काम से।" पिताजी ने फिर वैसे ही

मिनमिनाते हुए पूछा, "क्या काम है, कहाँ जाना है?" इस बार अम्मा ने डपटकर कहा, "तुम क्या समझोगे हमारे काम की बात! दिन-भर तो बस, कागज़-पत्तर में लगे रहते हो। मुझे किंकु की अम्मा के पास जाना है स्वेटर की नई डिज़ाइन सीखने के लिए।" पिताजी हाथ उठाकर अम्मी को ठहरने के लिए कहने ही वाले थे कि इतने में बगल से किंकु की अम्मा दिख गई। हाथ उठाने में पिताजी की कमीज़ का बटन खुल गया था। अम्मी ने एक बार खुले बटन को और एक बार किंकु की अम्मी को कुछ इस तरह से देखा कि पिताजी ने हड़बड़ाकर बटन बंद कर लिया। इतने में अनारको उस एक जगह से दूसरी जगह पहुँच गई। पर उस दूसरी जगह पहुँचते-पहुँचते न जाने कैसे अनारको को भान हो गया कि घर में पिताजी और अम्मा में से किसकी ताकत ज्यादा है। दूसरी जगह में क्या देखती है कि अरे, ये तो स्कूल आ गया! उसकी क्लास साफ दिख रही थी। उसके सारे साथी बैठे हुए थे—बिट्टो, गोलू, करनल, फुलपत्ती, सूरज और किंकु भी। और मास्टरजी? मास्टरजी अपनी कुर्सी पर एक पैर पर खड़े थे, दोनों कान पकड़े हुए! रोना-सा मुँह हो रहा था उनका। ऊपर से किंकु उन्हें डाँट रहा था, "कहिए, आज फिर पाँच मिनट लेट आए! बाहर खड़े-खड़े भूगोल के गुरुजी से बतिया रहे थे? स्कूल इसलिए भेजते

हैं क्या आपको ? चलिए, खड़े रहिए ।'' किंकु छड़ी भी हिला रहा था । अनारको को फिर से लगने लगा वही अटपटापन और साथ-साथ मजा भी आने लगा । इतना मजा जैसे उसी मजे में नहा रही हो । वह खिलखिला कर हँसने लगी । किंकु तो पहले से ही खिसियाया हुआ था । उसने अनारको की तरफ छड़ी फेंकी । छड़ी अनारको को लगी नहीं, पर उसने उसे उठा लिया और उसे लगा कि वह समझ गई कि स्कूल में मास्टरजी और उसके बीच ताकत का रिश्ता क्या है । मास्टरजी रोने-रोने को हो रहे थे, क्योंकि उनकी धोती ढीली हो रही थी ओर किंकु था कि कान से हाथ छोड़ने ही न दे ! अजीब नजारा था । अनारको को पता नहीं क्यों, मास्टरजी पर थोड़ी दया आने लगी । सो दया करते-करते वह उस एक जगह में एक तीसरी जगह पहुँच गई । वहाँ कुछ नहीं था । चारों तरफ बस कैसा दूर-दूर-सा । अनारको ने छड़ी को पैर पर बीचोबीच रखा और जोर लगाकर तोड़कर फेंक दिया, उस कहीं कुछ नहीं वाली जगह में । फिर वह आगे बढ़ गई ।

और अब पहुँच गई एक चौथी जगह में । यह चौथी जगह भी उसी एक जगह में थी । अरे, वहाँ तो बहुत हल्ला था । एक डॉक्टर था जिसके हाथ में सुई थी और सामने फुलपत्ती बैठी थी । डॉक्टर एक हाथ से सुई पकड़े, दूसरे हाथ से सर पीट रहा था, और फुलपत्ती थी कि

लगी उस डॉक्टर पर चिल्लाने—''अरे, मरीज मैं हूँ या

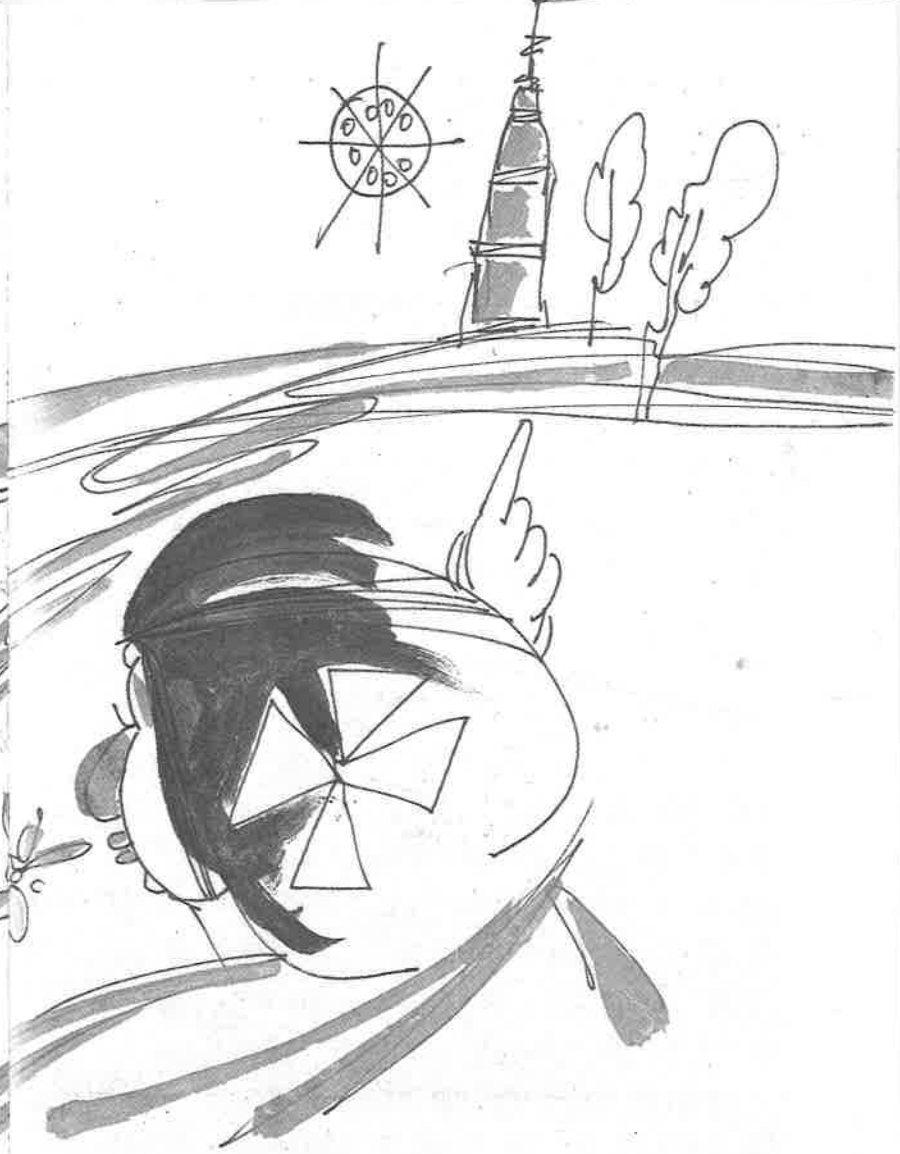


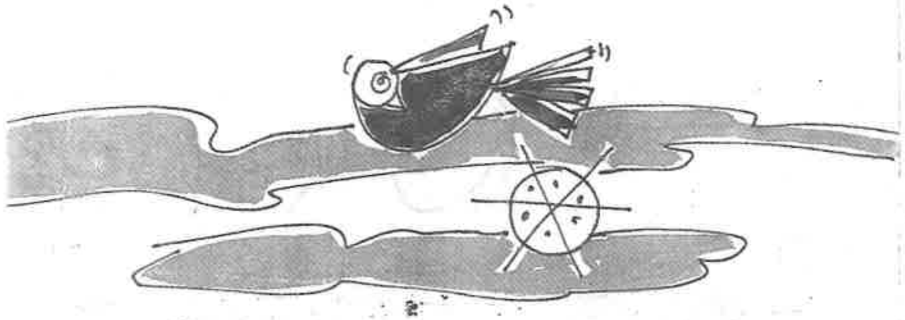
तुम ? बीमार मैं हूँ या तुम ? पेट में दर्द मुझे हो रहा है या तुम्हें ? नहीं लगवानी मुझे तुम्हारी सुई !'' डॉक्टर रोते-रोते गिड़गिड़ा रहा था, ''प्लीज़, एक बार लगा लेने दो । प्लीज़, अगर तुम्हें सुई नहीं लगी तो मुझे पैसे कहाँ से मिलेंगे ?'' पर फुलपत्ती तो बिलकुल अड़ी हुई थी, टस से मस नहीं हुई । डॉक्टर पसीना-पसीना हो रहा था, उधर अनारको ये नजारा देखकर अपनी खिलखिलाहट नहीं रोक पा रही थी ।

हँसते-हँसते वह एक पाँचवीं जगह में पहुँच गई । वहाँ एक बगीचा था । बगीचे में सेमल का पेड़ था । पेड़ के नीचे लोटा था, और सेमल की रुई वैसे ही उड़ी जा रही थी । अनारको समझ गई कि यह पाँचवीं जगह उस एक जगह

में नहीं है। वह यह भी समझ गई कि अब घर चलने का वक्त हो गया है। सो लोटा उठाया और चल दी घर की ओर। घर आई तो माँ ने पूछा, "क्यों अन्नो, चढ़ा आई ठाकुर जी को जल?" अनारको ने कहा, "हाँ अम्मी, जल चढ़ाया, फिर ठाकुर जी बहुत खुश हुए। उन्होंने हमारे गाल पर चुम्मी ली, और खाने को लड्डू भी दिया और कहा है कि कल भी जरूर आना।" इतना कहकर अनारको अंदर कमरे की ओर चल दी। बाहर अम्मा हँस रही थीं—"जाने किस दुनिया में खो जाती है पगली!" और अंदर? कमरे में अनारको मुस्करा रही थी।



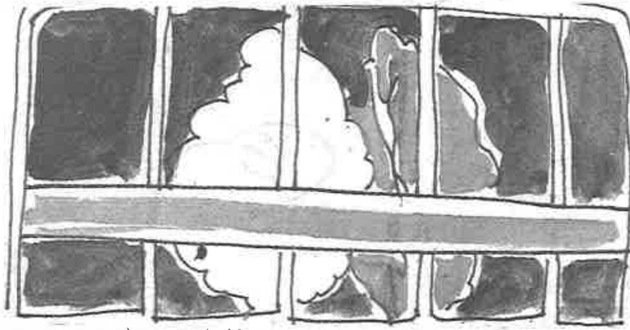




अनारको का दूसरा दिन

...एक पर एक चिड़ियाँ उड़ती जा रही हैं, जैसे जमीन तोड़कर चिड़ियों का फव्वारा चल रहा हो। इतनी सारी चिड़ियाँ कि हर तरफ रंग-बिरंगा हो रहा है। फिर और चिड़ियाँ, फिर और चिड़ियाँ। इतनी सारी कि गिनना शुरू करो तो फिर गिनते ही रहो। और गिनते-गिनते बस गिनती ही रह जाए और चिड़ियाँ देखना ही भूल जाओ... "अन्नो, अन्नो, चल अब उठ जल्दी।" अम्मी ने उसे झकझोरा और उसका सपना टूट गया। खैर, अनारको ने आँख मलते हुए कुछ सोचा, फिर खुश होकर कहा, "अच्छा अम्मी, ठाकुर जी को जल चढ़ाना है न ?" अम्मी उसके कान के पास मुँह ले गई और कहा, "नहीं, आज से तेरा स्कूल सवेरे का हो गया है, तुझे याद नहीं ? उठकर स्कूल जा।"

अनारको उठ तो गई, पर उसकी तो पूरी योजना थी कि ठाकुर जी को जल चढ़ाने के बहाने आज भी फिर



सेमल के नीचे बैठेगी, सो उसने कहा, "पर अम्मी, ठाकुर जी को खुश करना तो जरूरी है न ?" अम्मी ने लंबी साँस छोड़ी। फिर कहा, "नहीं, स्कूल जाना उससे भी जरूरी है। पढ़ेगी नहीं तो विद्या कहाँ से आएगी ? जा तैयार हो जा।" अनारको ने आखिरी कोशिश की, "लेकिन अम्मी, अगर ठाकुर जी खुश हो जाएँगे तो विद्या तो अपने-आप आ जाएगी, फिर स्कूल क्यों जाना ?" अम्मी ने दूसरी बार लंबी साँस छोड़ी और कहा, "अच्छा जा, पापाजी से पूछ ले...।" अनारको को यही बात अच्छी नहीं लगती कि अम्मी हमेशा यह कह देती हैं कि अच्छा अब पापा से ही पूछ ले। पर उसे मालूम था कि अब पापा के पास जाना ही पड़ेगा।

"पापा मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगी।"

"क्या कहा, स्कूल नहीं जाएगी ? तो विद्या कहाँ से आएगी ?" पापा ने जरा डपटकर पूछा। पर अनारको का तो एकदम ही मन नहीं था स्कूल जाने का। उसने पूछा, "पापा, विद्या मिल जाने से मैं क्या करूँगी ?" पापाजी ऐसे सवाल के लिए तैयार नहीं थे, खीझ गए। फिर कहा,



"तू जो विद्या सीखेगी तो बड़ी होकर तेरे काम आएगी। चल, तैयार हो जा।" पर अनारको जमी रही, "अभी से विद्या सीखूँगी तो बड़ी होते-होते भूल जाऊँगी।" पापा ने चिल्लाते हुए कहा, "इत्ती-सी लड़की और सुबह उठते ही बक-बक, बक-बक। चल, हाथ-मुँह धो, कुल्ला कर।"

मजबूरन अनारको ने वह सब किया जो उसे कहा गया था। गुस्से में रगड़-रगड़कर पाँवों को धोया तो कल शाम की धूल पूरी छूट गई और पानी की काली-काली धार सरकने लगी। अनारको उसका सरकना देखती रही। फिर कुछ सोचा और पापा से कहा, "पापा, एक बात पूछूँ?" पापा ने कहा, "चल पूछ।"

"विद्या क्या सिर्फ स्कूल से ही आती है, पापा?"

"क्या उल्टे-सीधे सवाल करती रहती है। जा रोटी रखी होगी, खा ले और बस्ता उठाके स्कूल जा।"

अनारको का बहुत-बहुत मन था कि पापा से कहे, 'पापा एक बात और पूछूँ' और फिर पूछे कि आप जब भी कोई चीज जानते नहीं तो यह क्यों कह देते हैं कि उल्टा सवाल मत कर?' लेकिन अनारको ने हिसाब लगाया और समझा कि अभी पापा से और सवाल पूछ नहीं सकते, नहीं तो पिटाई ही होगी। सो वह गणवेश पहनकर रसोई में गई और झटपट रोटी खाकर बस्ता उठाया और स्कूल चल दी।

स्कूल के रास्ते पर धूलवाली सड़क पर वह कुछ दूर पैर से लकीर खींचती चली । फिर एक कीड़े का करतब देखने लगी । उसने एक चींटी पकड़ी और उसे धूल के उस छोटे-से गड्ढे में छोड़ दिया जो उस कीड़े ने बनाया था । चींटी सरकते हुए बिलकुल नीचे पहुँच गई । फिर उसमें से एक कीड़ा निकला और चींटी को पकड़ लिया । फिर क्या, झट से उसने कीड़े पर थूका और तिनके से एक साथ थूक, धूल, चींटी और कीड़े को उठाकर किनारे कर दिया । फिर देखने लगी, पर कुछ साफ दिखाई नहीं दिया तो उठकर फिर चलना शुरू किया । चलते-चलते खूब दूर-दूर तक देखने लगी । रेल की पटरी, पटरी के पीछे खंभे, खंभों के पीछे खेत, फिर पेड़ और वो··· दूर पहाड़ । वह सोचने ही लगी थी कि पहाड़ के पीछे क्या होगा, कैसा होगा कि इतने में स्कूल की घंटी बज उठी तो अनारको को दौड़ना पड़ा । अभी परसों किंकु प्रार्थना में देर से पहुँचा था तो उसे चार छड़ी लगाई थी मास्साब ने । अनारको दौड़ते-हाँफते, दौड़ते-हाँफते स्कूल पहुँची और प्रार्थना में अपनी कक्षा की कतार में खड़ी हो गई । पहले मास्साब एक लाइन बोलते, फिर सब बच्चे एक साथ दोहराते । अनारको ने आज औरों के साथ प्रार्थना में नहीं गाया । जब सब गाते तो वह चुप रहती, और एक अजीब-सी आवाज सुनाई पड़ती थी उसे । सबके गाने का कैसा मधुमक्खी-सा स्वर, पर बहुत जोर-जोर से । यही सुनते- सुनते वह सोचने लगी कि अच्छा, स्कूल में भी प्रार्थना होती है ! इसका मतलब है कि स्कूल में भी मास्साब लोग मानते हैं कि ठाकुर जी को खुश करने से विद्या मिलती है । उसने इस बात को अपने मन में गाँठ लिया और सोचा कि अगली बार अम्मी के सामने यही बात रखेगी । गाँठ लगाते-लगाते प्रार्थना खत्म हो गई और फिर एक साथ कतारों को तोड़ने की हलचल । थोड़े समय के लिए उथल-पुथल, हल्ला-गुल्ला, धूल और फिर सब ठंडा—सब कमरों के अंदर ।

पहली घंटी हिंदी की थी, मास्टरजी कविता याद करा रहे थे । "झंडा ऊँचा रहे हमारा"—मास्टरजी छड़ी हिला-हिलाकर कह रहे थे और उसके सारे साथी हिल-हिलकर दोहरा रहे थे—"झंडा ऊँचा रहे हमारा ।" पर अनारको का मन इसमें नहीं था । उसे मजा नहीं आ रहा था, सो वह चुप रही और चुप रहते-रहते कुछ अलग-अलग खयालों में खो गई । अचानक सब तरफ सन्नाटा हो गया था और मास्टरजी सीधे



उसकी तरफ आने लगे। इसके पहले कि वह कुछ सँभल पाती, मास्टरजी ने उसका कान पकड़ा और पकड़े-पकड़े उसे दरवाजे तक ले गए, फिर धकेलकर बाहर निकाल दिया और पीछे से चिल्लाए, "तेरा पढ़ने में मन नहीं लगता, तो मत आना स्कूल, जा !" अनारको को रोना तो आ ही रहा था, सो मुँह लटकाए चलती बनी। पर एक बार स्कूल के अहाते से निकलते ही उसे फुरफुरी होने लगी और वह तेज-तेज कदम से सेमल के पेड़ की तरफ चलने लगी। आज वहाँ कोई नहीं था, क्योंकि किंकु भी तो सबके साथ हिल रहा था उधर कक्षा में। सो सेमल के नीचे छोटे-छोटे पत्थरों को चुनने लगी, फिर हाथ से धूल हटाकर सपाट जगह बनाई और पत्थरों को सजाने लगी, गोल-गोल, ताकि फूल बन जाए। इतने में वह सोचने लगी पिछली गर्मी की बात, मामाजी के यहाँ भौंरी गाँव में। गाँव, थोड़ा आगे निकलकर जंगल और सुबह-सुबह अगर जंगल से थोड़ा आगे निकल जाओ तो सामने कल-कल करती चमकती नदी, और नदी के उस तरफ रेत। फिर वह और मंतो रेत में गड्ढा करते, बिलकुल नदी के किनारे, तो रेत में पानी भर आता। फिर वे दोनों गमछे से छोटी-छोटी मछलियाँ पकड़कर उस गड्ढे के पानी में छोड़ देते, बड़ी देर तक उन मछलियों को देखते रहते और फिर उस गड्ढे को धसकाकर मछलियों को फिर

से पानी में जाने देते।

अनारको यह सब याद कर ही रही थी कि न जाने कैसे अचानक वह एक गाँव में पहुँच गई। गाँव के पास हरा-भरा जंगल था, जंगल के पार काली-भूरी चट्टानें थीं, चट्टानों के उस पार नीचे नरम-नरम, कीचड़-सी, भीगी-भीगी दलदली रेत थी और पास में नदी, और नदी में थीं मछलियाँ। अरे, ये क्या ! मछलियाँ तो बातें कर रही थीं, और अनारको साफ सुन सकती थी उनकी बातें। पानी के अंदर गोल-से घेरे में थीं मछलियाँ। कुछ बैठक-सी हो रही थी मछलियों की। उसमें से एक मछली कुछ इस तरह से तनकर बोल रही थी कि अनारको को लगा, वह मछलियों का राजा है।

"सुनते हैं, कुछ मछलियाँ अनुशासन से नहीं रह रही हैं। जब मन आया नाच रही हैं और जब मन आया गा रही हैं।"

एक साथ कई मछलियों ने सिर हिलाया, "हाँ, महाराज, सही है, कुछ मछलियाँ बहुत ही सिरदर्द बनती जा रही हैं।"

महाराज मछली ने कहा, "फिर इनका इलाज किया जाए ?"

एक मछली थोड़ा आगे को तैरकर आई और बोली, "इलाज क्या हो सकता है, महाराज, ये तो बचपन से ही

ऐसी हैं !''

महाराज ने कहा, ''फिर बचपन का इलाज किया जाए—मेरा मतलब, बचपन से ही इलाज किया जाए।''

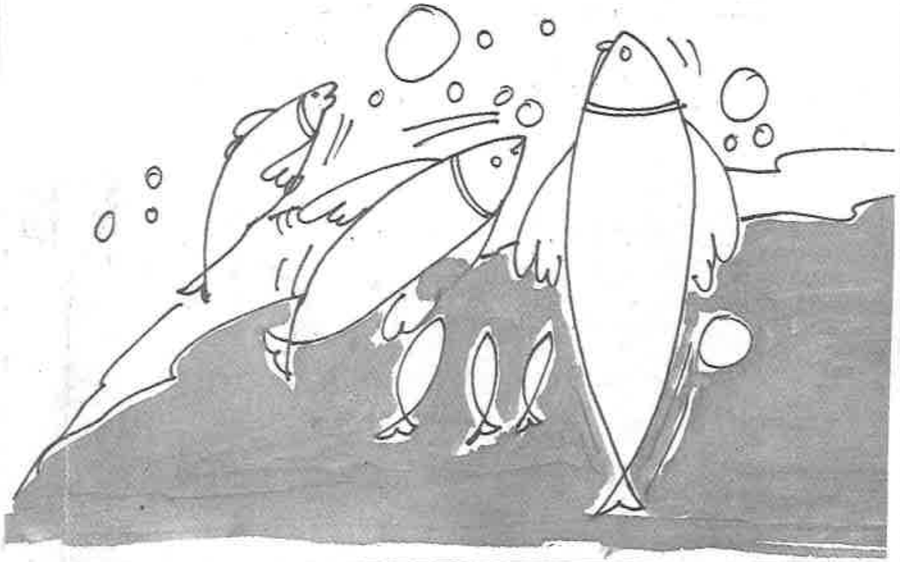
''हाँ, महाराज, अब हम सारी मछलियों को बचपन से ही समझाना शुरू करें कि कैसे तैरना चाहिए। और कैसे रुकना चाहिए, कि क्या अच्छा होता है क्या बुरा, कि क्या सही होता है और क्या ग़लत।'' एक अच्छी मछली ने अपनी दाढ़ी हिलाते हुए कहा। एक साथ इतना बोलने के कारण वह हाँफ रहा था। इतने में एक दूसरी मछली बोल पड़ी—''अरे सारे बच्चे इतने चंचल हैं कि उनको एक जगह बैठा पाएँ, तभी कुछ समझा पाएँगे।'' दूसरी मछली का बोलना खत्म होते ही तीसरी मछली ने कहना शुरू किया—''पहले इस पर बात होनी चाहिए कि हम अपनी बात इतनी जगह कैसे समझा पाएँगे। कुछ मछलियाँ पत्थरवाले घाट पर रहती हैं, कुछ बरगद की नीचेवाली गहराई में, कुछ उधर ऊपर की ओर...।'' इससे पहले कि वह मछलियाँ कहाँ-कहाँ रहती हैं, यह गिनाती चलती, एक चौथी मछली ने धीरे-धीरे गर्दन हिलाते हुए कहा, ''अरे हमें जो कुछ भी समझाना होगा, हम उसे पत्थरों पर लिखवा लेंगे। फिर हम उन किताबों को पढ़ेंगे और देखेंगे कि उनमें वही बात लिखी है या नहीं जो हम समझाना चाहते हैं।'' इस सबके दौरान महाराज मछली ने समझ

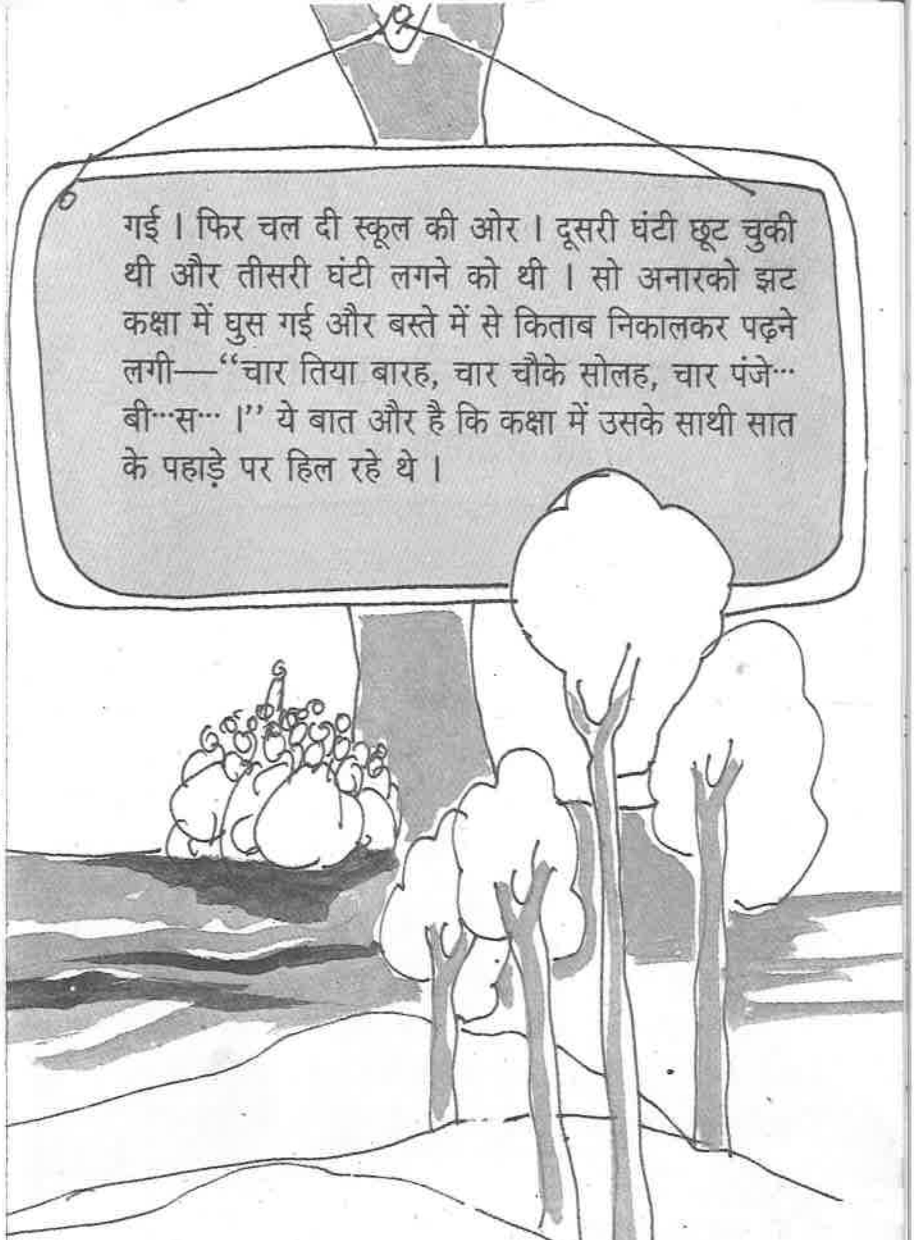
लिया था कि बैठक का काम ठीक-ठाक चल रहा है, सो वह ऊँघ रहा था। अब वह अचानक हड़बड़ाकर उठा और कहा, ''मैं भी देखना चाहूँगा कि हमारे बच्चे कैसी किताबों से पढ़ेंगे।'' सारी मछलियों ने एक साथ सर हिलाया—''हाँ-हाँ, जरूर-जरूर, महाराज भी किताबों की जाँच करेंगे।'' और महाराज मछली फिर से ऊँघने लगा। चौथी मछली बहुत देर से चुप था और इस कोशिश में था कि बात का छोर कहीं और न चला जाए, सो बड़े ध्यान से धीरे-धीरे मुँह खोल और बंद कर रहा था। अब उसने बड़ी होशियारी जताते हुए कहा, ''अगर बच्चे भाग जाएँगे तो हम कमरे बना देंगे। उन कमरों में हम उनको बैठा लेंगे। फिर सबको एक साथ समझाएँगे।''

एक पाँचवीं मछली ने अपनी ऐनक सीधी कर, खुजलाते हुए कहा, ''लेकिन कमरे में बैठे-बैठे तो बच्चे थक जाएँगे। फिर हम जो समझाएँगे, उनकी समझ में ही नहीं आएगा।'' फिर वह अपनी जगह पर कुछ ऐसे हिलने-डुलने लगी जैसे कोई बहुत पते की बात की हो और दाएँ-बाएँ देखने लगी।

छठी मछली बहुत देर से चुप था, अब वह तन गया और कहा, ''अरे हम उन्हें थोड़ी-थोड़ी देर में बाहर छोड़ देंगे।'' एक सातवीं मछली अपनी ही जगह पर कुछ कुनमुनाई, कुछ हँसी। फिर हँसते हुए, पर सोचते हुए

कहा, "भई उनको बाहर छोड़ देंगे तो वे भाग जाएँगे, फिर लौटकर कमरों में नहीं आएँगे।" अब आठवीं मछली की बारी थी। महाराज मछली जोर-जोर से ऊँघ रहे थे। सो आठवीं मछली ने जरा खँखारा और कहने लगी, "हम एक ऐसा बटन बनाएँगे कि हम जब चाहें बच्चे बाहर से अंदर आ जाएँगे और जब चाहें बच्चे अंदर से बाहर चले जाएँगे।" फिर अनारको को दिखने लगा बटन, फिर ढेर सारे बटन। फिर उनमें से एक बटन बड़ा होता गया, लंबा होता गया, काला होता गया और उसे दूर से स्कूल की घंटी दिखने लगी। 'धत् तेरे की, मछलियों में भी स्कूल बनने लगा!' उसने सोचा और वह हड़बड़ाकर खड़ी हो





गई। फिर चल दी स्कूल की ओर। दूसरी घंटी छूट चुकी थी और तीसरी घंटी लगने को थी। सो अनारको झट कक्षा में घुस गई और बस्ते में से किताब निकालकर पढ़ने लगी—"चार तिया बारह, चार चौके सोलह, चार पंजे··· बी···स···।" ये बात और है कि कक्षा में उसके साथी सात के पहाड़े पर हिल रहे थे।

अनारको का तीसरा दिन

(दो-दो दार्शनिक घड़ी)

आज सोए-सोए अनारको को मालूम हो गया कि पापा बिस्तर पर बगल में बैठे उसके बाल सहला रहे हैं। सो उसने आँखें बंद रखीं और उसे पापा खरगोश-जैसे दिखने लगे! जैसे कोई खरगोश बगल में दुबका हो और अपनी टाँग आगे बढ़ाकर छू रहा हो उसे। फिर वह सोचने लगी, पापा भी कैसे-कैसे लगते हैं—कभी हाथी-जैसा चलते हैं, कभी कुत्ते-जैसा गुर्राते हैं, कभी बगुले-जैसा सोचते हैं और कभी-कभी खरगोश-जैसा छूते हैं। फिर वह और अंदर सोचने लगी। अच्छा, मैं भी तो अलग-अलग लगती होऊँगी! मेरे अंदर भी कोई है जो कभी कुछ करने को कहती है और कोई और है जो कुछ और करने को कहती है। अच्छा, अभी क्या करें? फिर उसने मन ही मन कुछ तय किया। तय करते-करते पापा जा चुके थे, सो वह उठी





और कागज-पेंसिल लेकर चल दी अलमारी की ओर । अलमारी से लूडो का डिब्बा निकाला । उसमें से पासा निकाला । फिर कागज पर पेंसिल तो रखी, पर लिखा उसने मन ही मन में—

(1) अभी जाकर सेमल के नीचे बैठूँगी ।
(2) अभी मुँह धोकर स्कूल का काम करूँगी ।
(3) अभी जाकर गोलू से कट्टी खत्म कर दूँगी ।
(4) अभी किंकु के घर जाकर देख आऊँगी कि कल जो केंचुआ पकड़कर बोतल में रखा था वो अभी क्या कर रहा है ।
(5) अभी घर से भाग जाऊँगी ।
(6) अभी बर्तन साफ करने में अम्मी की मदद करूँगी ।

फिर उसने पासे को डिब्बे में भरकर कई बार हिलाया, फिर डिब्बा टेढ़ा करके पासे को जमीन पर लुढ़का दिया । वह लुढ़कते-लुढ़कते घूम-घूमकर पाँच पर ठहर गया । अनारको देखकर थोड़ा चौंक-सी गई । फिर लूडो अंदर रखी, दाएँ-बाएँ देखा और बस, घर से बाहर हो गई । और फिर दौड़ने लगी किंकु के घर की तरफ । अनारको घर से भाग जो रही थी ।

अनारको किंकु के घर के दरवाजे की तरफ जा ही रही थी कि अचानक किंकु खिड़की में से टक-सा दिख गया । सो अनारको रुककर खिड़की के पास गई । उचककर

अच्छी तरह देखा तो देखती है कि किंकु मियाँ जमीन पर बैठा है, दीवार की ओर मुँह करके। अनारको समझ गई कि किंकु को सुबह-सुबह किसी बात की सजा मिल रही है। हुँ-ह-ह ! कैसी-कैसी सजा ढूँढ़ निकालते हैं ? ऐसी सजा निकाली कि कोई चाहे तो भी तो बाहर करीम मियाँ की बेकरी के पास खड़े होकर खूब सूँघ न सके या फिर रेत में से पत्थर उठाकर उसके नीचे को गाल से छू न सके या फिर सड़क चलते साइकिल के पहिए से निकलती चूँ इ इ इ चूँ इ सुन न सके। धीरे-धीरे अनारको को जोर से गुस्सा आ रहा था—आज, अभी, अचानक। पर उसने गटककर गुस्से को पी लिया और किंकु को धीरे से कहा, "किंकु चल भाग चलें।" किंकु को ठीक से सुनाई नहीं दिया या फिर सुनाई दिया, पर समझ नहीं पाया। सो उसने आवाज दबाते हुए, पर कुछ जोर से कहा—"क्या ?" अनारको ने दबी आवाज में, पर जरा साफ करते हुए धीमे-धीमे कहा—"मैं घर से भाग रही हूँ, तू भी घर से भाग चल।" किंकु ने उसका पूरा बोलना सुना ही नहीं और उछलकर खिड़की पर आ गया। फिर खिड़की की छड़ों को घुमाकर टेढ़ा करते हुए, छड़ों के बीच से बाहर निकलकर झप्प से जमीन पर आ गया। असल में यह सब इतना जल्दी हो गया कि इसके पहले कि अनारको देख पाती कि ये सब कैसे हुआ, वह क्या देखती है कि किंकु उसके गले में दोनों



हाथ डालकर दोनों पैरों पर उछल रहा है। जब तक अनारको यही ठीक तरह से देख पाती कि किंकु ने उसके गाल पर चुम्मी धर दी। अनारको अब देखना भूलकर खुश होने लगी। फिर दोनों चल पड़े पीछे की बाड़ की ओर। बाड़ उठाई और एक के बाद एक नीचे से पार हो गए। फिर नाली पर से छलाँग मारी और आ गए सड़क पर। दोनों ने एक साथ लंबी साँस छोड़ी। किंकु का साँस छोड़ना पहले खत्म हो गया। फिर अनारको और किंकु आगे चल पड़े।

इतने में सामने गोलू के पापा दिख गए। घर के सामने छाँव में खटिया पर लेटे पंखे से हवा कर रहे थे। उन्होंने आवाज लगाई—"क्यों बच्चो, कहाँ जा रहे हो ?" अनारको ने फट से झूठ बोला—"हम बाजार जा रहे हैं। अम्मा ने बटन लाने भेजा है।" बस, गोलू के पापा ने झट बोल दिया, "अच्छा उधर तेरी मौसी होगी मंदिर में।

उनको बोल देना कि नल आ रहा है, जल्दी आकर पानी भर लें घर का।" बस, अनारको और किंकु एक साथ मुड़ गए और आगे चल दिए। पीछे से गोलू के पापा कह रहे थे, "अरे बड़े अजीब बच्चे हैं!" और उनके चेहरे पर थोड़ी चिंता छाने लगी। इधर अनारको और किंकु अलग-अलग बड़बड़ कर रहे थे।

अनारको—हुँ-ह-ह, जहाँ जाओ वहाँ हुक्म सुनना पड़ता है। बस देखा कि बच्चे हैं, और हुक्म चला दिया। चाहे हमारा मन हो या न हो, बस हुक्म! कहीं भी कोई बच्चा दिख गया और चला दिया हुक्म! जैसे हमारा कोई काम नहीं है, सिर्फ उनका हुक्म बजाते फिरें...

किंकु—खुद क्यों नहीं पानी भर सकते? उठिए और जाइए नल के पास। वो नहीं करेंगे, और कहेंगे—जा मौसी को भेज देना पानी भरने। और गोलू की अम्मी मेरी मौसी कब से हो गई!

अनारको—घर रहो तो अम्मी का हुक्म, पापा का हुक्म, घर आए मेहमानों का हुक्म, रिश्तेदारों का हुक्म। और बाहर जाओ तो दुकानवाले का हुक्म, मास्साब का हुक्म और अब गोलू के पापाजी का हुक्म। किंकु, घर-बाहर सब एक जैसा है रे!

फिर अनारको ने किंकु के गले में हाथ डाला और किंकु, जोकि चुप हो गया था, सड़क पर पैर से थप-थप

करने लगा। धूप थोड़ी तेज हो रही थी पर उन्हें मजा आ रहा था। पीछे से पीठ पर धूप चनून-चनून कर रही थी और उनको सिरसिरी-सी हो रही थी लगातार। दोनों चले जा रहे थे मस्ती में कि एक आदमी दिख गया जो सड़क के बीच में खड़े होकर उनकी तरफ सीधे देख रहा था बड़े गौर से, जैसे उनकी चाल में ही कोई अजीब बात हो। उस आदमी को कभी देखा तो नहीं था पर लगता था कहीं देखा है। सिगरेट के साइनबोर्ड पर, कपड़े की दुकान में या भूगोल की किताब में। इतना सोचते-सोचते वह आदमी पूछ बैठा—"क्यों बच्चो, तुम लोग कहाँ जा रहे हो?" इधर किंकु ने सोचा कि एक बार झूठ बोला तो घाटे में पड़ गए। सो उसने कहा, "हम घर से भाग रहे हैं।" उसने सच बोला था। इस पर वह आदमी चौंक गया। थोड़ा और चौंक जाता तो शायद पीछे को गिर जाता, पर उतना नहीं चौंका और सँभलकर कहा, "अरे, क्यों भाग रहे हो घर से?" फिर से किंकु ने ही जवाब दिया, "क्योंकि हमारे पापा-अम्मी हमें पीटते हैं।" किंकु ने पूरा सच तो नहीं, पर थोड़ा ही झूठ बोला था। इस पर वह चश्मेवाला आदमी जैसे अचंभे में पड़ गया। वह ऐसे बोलने लगा—"अच्छा, तुम्हारे अम्मी-पापा तुम्हें पीटते हैं! तो बच्चो, तुम थाने में जाकर रिपोर्ट कर दो और नहीं तो घर लौट जाओ।

पर इस तरह से भागो मत ।" अनारको और किंकु ने कसकर उसकी तरफ देखा एक साथ, फिर अचानक कंधा हिलाते हुए चल दिए आगे, जैसे कंधों से एक साथ बोल रहे, 'हुँ-ह-ह-ह !' फिर जामुन के पेड़ के नीचे आकर बड़बड़ाने लगे दोनों—

अनारको—घर लौटो या थाने में जाओ—थाने जाओ या घर लौटो । मतलब कहीं न कहीं बंद रहो, पहरे में रहो ।

किंकु उस आदमी की नकल कर रहा था—अच्छा, अम्मी-पापा पीटते हैं ! हुँ-ह-ह, जैसे पहली बार सुन रहा हो ! खुद भी तो पिटा होगा जब छोटा था । अम्मी-पापा पीटते हैं ! और पीटना क्या होता है ? जब मेरे गाल के बदले मेरे मन को पीटते हैं, तो क्या वह पीटना नहीं होता ?

अनारको समझ गई कि यह किंकु की दार्शनिक घड़ी है, सो उसने चुप्पी साधी ।

किंकु—आखिर कब तक चलेगा पीटना । दादाजी की चपत पापा को पड़ी सो उन्होंने हमारे जिम्मे कर दी, जैसे कोई सोने की पुटरिया हो । हुँ-ह-ह-ह··· क्यों अनारको, तेरे पास अठन्नी है ?

अनारको—अठन्नी का क्या करेगा ?

किंकु—चलके चंदू के यहाँ हलवा खाएँगे ।

अनारको—पर अठन्नी तो नहीं है ।

किंकु—फिर चल, धन्नाबाबू के बगीचे से कैरी तोड़कर खाएँगे ।

अनारको और किंकु सड़क किनारे धन्नाबाबू के बगीचे में घुसनेवाले ही थे कि गेट से धन्नाबाबू का मुंशी निकला । अनारको को याद आया कि यह वही मुंशी था, जिसने धन्नाबाबू की तिजोरी से रुपया चुराया था, गए साल, जब होली के बाद शहर में दंगा हुआ था । तो वहीवाले मुंशीजी अब उनके पास आए और नाक से कहने लगे—"क्यों बच्चों, तुम लोंग सबेरें-सबेरें क्यों आएँ हों यहाँ

किंकु ने तनकर जवाब दिया, "हम कैरी तोड़ने आए हैं !"

किंकु के सिर पर सच बोलने का भूत अब भी सवार था । मुंशीजी अब जैसे गाने लगे, "कैंरी तोड़नें आएँ हों, चुराने आएँ हों, कैंरी चुरानें आएँ हों तुम लोंग, सुबह-सुबह कैंरी चुरानें आएँ हों ?" अनारको को लगा कि मुंशीजी का गाना कभी बंद नहीं होगा । तभी वह बंद हो गया । मुंशीजी जीभ से कुछ आवाज करते हुए थूक छींकते हुए हिल-हिलकर बोलने लगे, "नहीं बच्चें, चोंरीं नहीं करतें । चोंरीं करना पाप होता है··· ।" अनारको और किंकु को भी अब लगने लगा कि मुंशीजी फिर गाने लगेंगे, सो उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "चल यहाँ से चलते हैं ।" और आगे चल दिए और चलते-चलते बड़-बड़ करने लगे ।

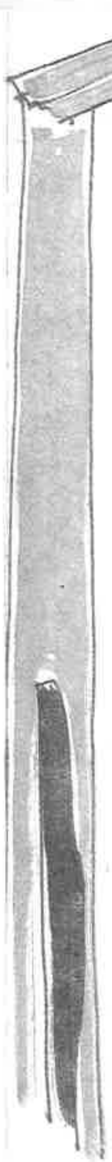
अनारको—वाह-वाह, 'सुबह सुबह चोरीं करने आएँ हों' ? जैसे रात में चोरी करते तो ठीक था !

किंकु—बड़ा उपदेश देने चले हैं कि चोरी नहीं करते, पाप होता है। और खुद ? खुद क्या करते हैं ? पिछले साल लटके हुए थे चूहे-से, जब चोरी करते पकड़े गए थे।

अनारको—और हमारे पास अठन्नी भी न हो कि हम चन्दू हलवाई का हलवा खाएँ और हमारा मन करे कि किसी चीज पर दाँत चलाएँ, तो हम कैरी चोरी नहीं करें तो क्या करें ?

किंकु—उपदेश देंगे और खुद उस पर नहीं चलेंगे। बड़े लोग इतने उपदेश बच्चों को देते हैं। उनमें एक भी कोई उपदेश है जिस पर खुद चलते हों ? आखिर पापा और अम्मी उसे जो उपदेश देते हैं, कितनों को वे खुद मानते हैं ? अम्मी कहती हैं—झूठ मत बोलो··· और खुद अनारको की अम्मी से झूठ बोल आएँगी कि हमारे यहाँ तो कोई बासी रोटी खाता ही नहीं। और पापा उसको कहेंगे कि कभी किसी से मारपीट मत करना और खुद अम्मी के बाल पकड़कर चाँटा मारेंगे जब उनको गुस्सा आएगा, या फिर अखबार पढ़ते-पढ़ते झल्लाएँगे, 'ये लोग बम क्यों नहीं फेंक देते पाकिस्तान पर !' बाहर हो या घर, उपदेश ही उपदेश—वैसे ही झूठे।

अनारको समझ गई कि यह किंकु की दूसरी दार्शनिक



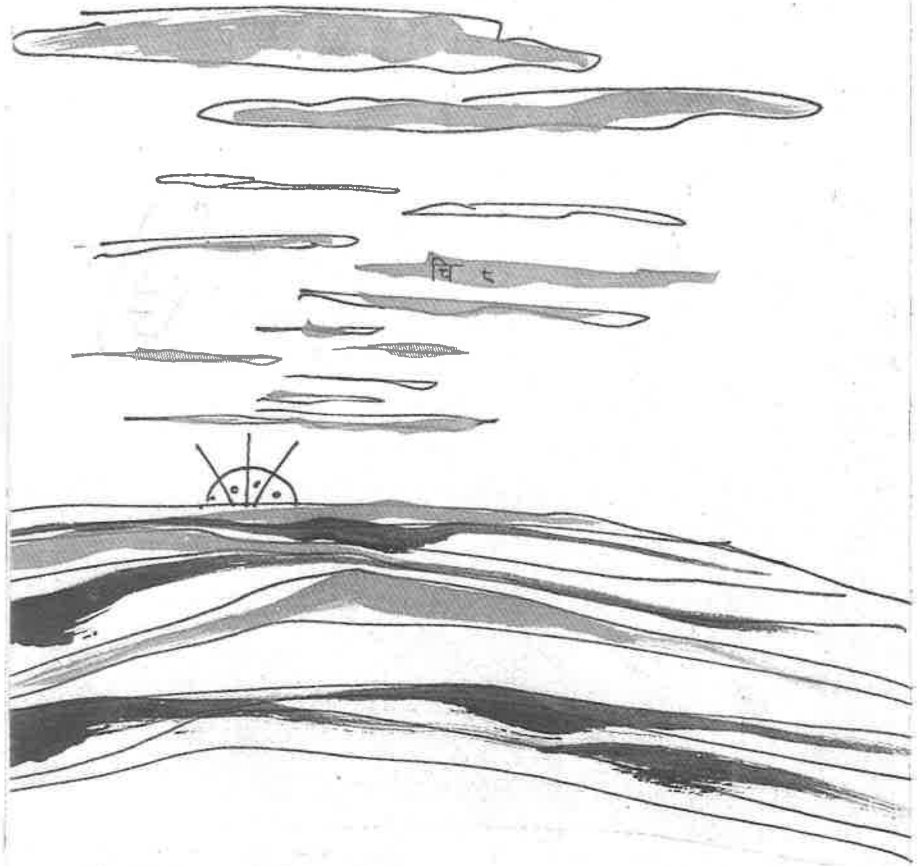
घड़ी है, सो वह चुप रही। पर तब तक किंकु की घड़ी पार हो चुकी थी। उसने कहा, "चल अनारको, वापस चलते हैं। भूख लगी है।" अनारको ने उसका हाथ पकड़ा। फिर दोनों पीछे मुड़े। पीछे मुड़ने में हाथ छूट गया तो वे फिर से हाथ पकड़कर झुलाते हुए घर की ओर चल दिए। दूर से सेमल का पेड़ दिख रहा था। उसमें से अब भी रुई निकल-निकलकर उड़ रही थी। अनारको और किंकु ने एक साथ लम्बी साँस छोड़ी और फिर एक साथ रुककर सोचा—'अच्छा इसमें इतनी रुई आती कहाँ से है ?'' फिर दोनों घर की ओर चल दिए।

घर पहुँचते-पहुँचते अनारको किंकु को बोलने लगी "देख किंकु, एक घर। उसके बाहर एक घर, फिर उसके बाहर एक और घर··· घर ही घर। किंकु, हमें तो लगता है घर से भाग ही नहीं सकते।"

किंकु समझ गया—यह अनारको की दूसरी दार्शनिक घड़ी है। वह चुप रहा और पैर से धूल उड़ाने लगा।

अच्छा, मैंने ये तो बताया ही नहीं कि दार्शनिक घड़ी से मेरा मतलब क्या है। देखो, जिस घड़ी हम दौड़ते-खेलते अचानक रुक जाते हैं और सोचने लगते हैं कि वो दूर आसमान, और उसके पीछे क्या है, तो वह घड़ी दार्शनिक घड़ी होती है। यह तो एक दार्शनिक घड़ी हुई और दूसरी

दार्शनिक घड़ी ? जिस घड़ी हम ये सोचते-सोचते कि वो दूर आसमान और उसके पीछे क्या है, यह सोचने लगें कि आसमान के पीछे क्या और उसमें हम कहाँ हैं तो वह दूसरी दार्शनिक घड़ी हुई ।

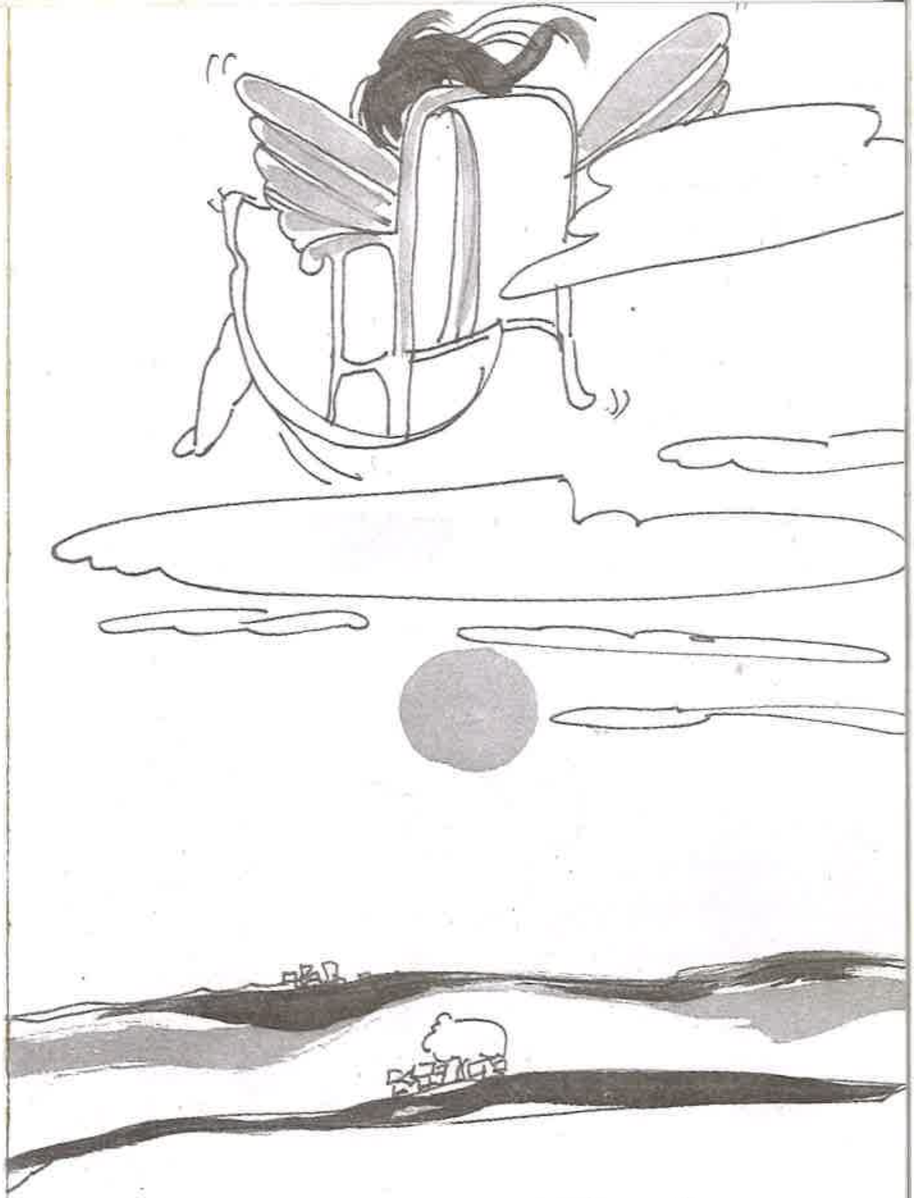


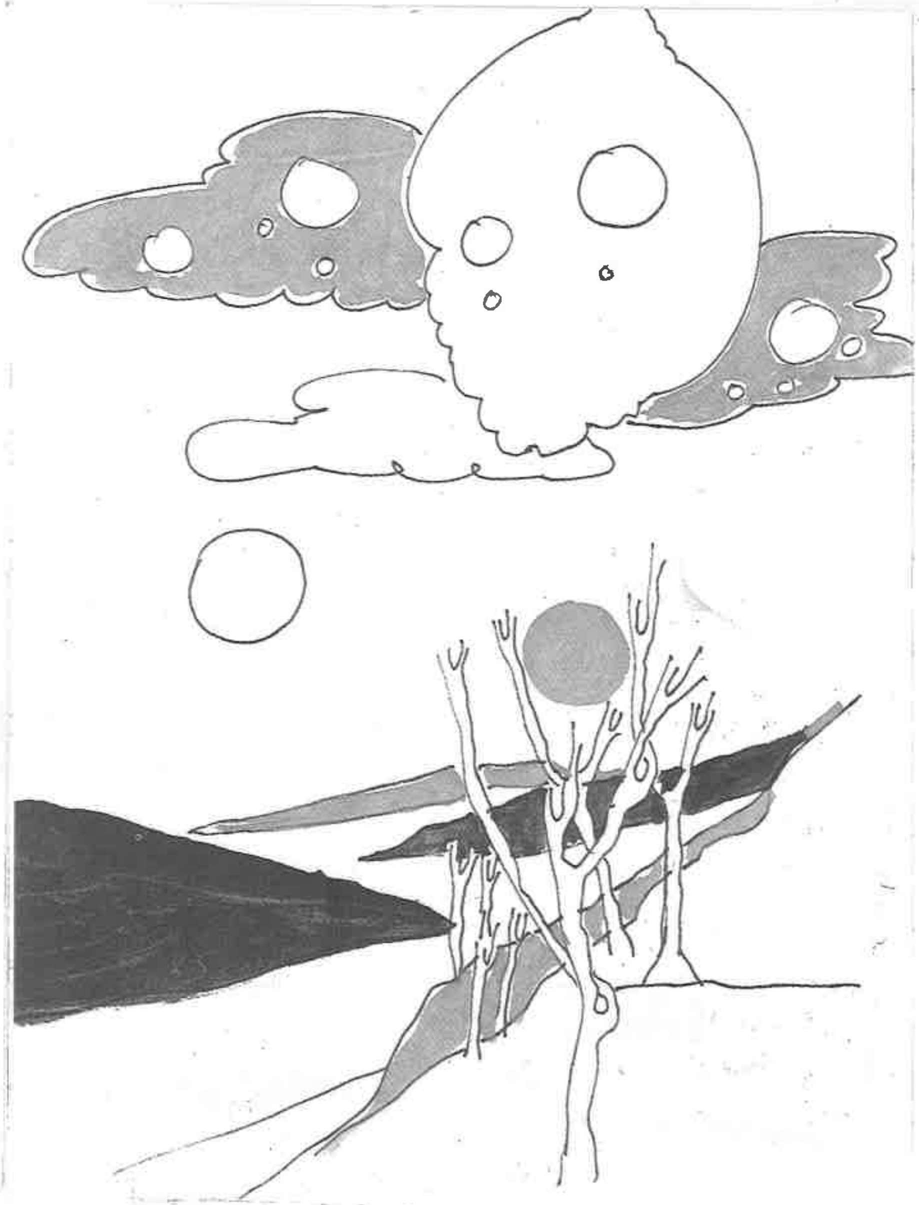
अनारको का चौथा दिन

आज अनारको सुबह सो के उठी तो हाँफ रही थी । रात सपने में बहुत बारिश हुई । अनारको ने याद किया और उसे लगा, आज के सपने में जितनी बारिश हुई उतनी तो पहले के सपनों में कभी नहीं हुई । कभी नहीं । जमके बारिश हुई थी आज के सपने में और जमके उसमें भीगी थी अनारको । खूब उछली थी, कूदी थी, चारों तरफ पानी छिटकाया था और खूब-खूब भीगी थी । बारिश का पानी उसके सिर पे गिरता, फिर बालों से सिरसिर करता उसकी आँखों के ऊपर से, फिर गालों के किनारे से उसके मुँह के पास आता और वह निचला होंठ जरा टेढ़ा करके पी जाती पानी—स्सुड़्क ! और फिर दौड़ती-भागती इधर से उधर और उधर से इधर । अनारको हाँफ रही थी । जब हाँफना थोड़ा कम हुआ तब तक अनारको की आँख लग गई और वह फिर से सपना देखने लगी । फिर भी

थकी तो थी ही, सो उसे कुर्सी दिख गई सामने और वहीं लस्त-पस्त हो गई ।

सपना ही है, सच तो नहीं, पर उससे क्या फर्क पड़ता है ? तो अनारको ने उस सपने की कुर्सी में लस्त-पस्त होकर चारों तरफ हाथ-पैर फैलाए और बस वहीं सो गई । सोते-सोते उसने एक और सपना देखा । ये सपने के अंदर का सपना था । सो अनारको अब बहुत गौर से देखने लगी । अचानक कुर्सी के दोनों बगल से लंबे-लंबे पंख उगने लगे । लंबे-लंबे सफेद पंख, कुछ नीलापन लिए । फिर धीरे-धीरे कुर्सी ऊपर उड़ने लगी, और कुर्सी में बैठे-बैठे अनारको भी । खूब हल्का-हल्का लग रहा था उसे—जैसे सारे बदन में हल्का-हल्का खून दौड़ रहा हो । अनारको ने आज पहली बार जाना कि सेमल की रुई होना क्या होता है । अनारको ने नीचे देखा तो देखती है घर, पेड़, मैदान, स्कूल··· सब छोटे होते जा रहे हैं । धुँधले होते जा रहे हैं । फिर तो वह और ऊपर जाने लगी । तो सामने एक मोटा-सा बादल आया और अनारको उसके बीच में से जाने लगी कुर्सी के साथ । हल्का-हल्का बादल और उसके बीच से हल्की अनारको । फिर बादल भी छोटे होते गए और सेमल की रुई-जैसे दिखने लगे । और कुर्सी थी, सो उड़े जा रही थी—पंख हिलाते हुए बड़े आराम से, जैसे नाच रही हो । अनारको





को थोड़ा डर-सा लग रहा था, इसलिए वह सो गई । इतने में कुर्सी ने जैसे जमीन छुई और अनारको ने देखा, वह एक अजीब जगह पहुँच गई है ।

चारों तरफ देखा तो देखती है कि वहाँ चारों तरफ पेड़ हैं और पास में नदी बह रही है । पर ये पेड़ तो बिलकुल अजीब थे । उनका तना तो जमीन के ऊपर वैसे ही था, जैसे पेड़ों का होता है पर ऊपर से जड़ें निकली हुई थीं टहनियों और पत्तों की जगह । ऊँचे पेड़, छोटे पेड़, पर सबके साथ वही । आसमान में उनकी जड़ें ऐसे दिखतीं जैसे जोर की हवा में उनके मोटे-मोटे बाल उड़ रहे हों । अनारको ने सोचा, 'अच्छा, इसके पत्ते कहाँ होंगे ।' सो वह नदी के पास गई और एक पेड़ के नीचे जाकर जमीन से कान लगाया । उसने साफ सुना—नीचे से कोंपल फूटने की आवाज हो रही थी, रुक-रुक कर । नजर उठाई तो क्या देखती है कि नदी का पानी नीचे से ऊपर की ओर बह रहा है । अनारको सोचने ही लगी थी कि इतना पानी बहकर ऊपर कहाँ जाता होगा कि इतने में पानी में उसे अपनी परछाई दिख गई । उसने देखा, परछाई मुस्कुरा रही थी और खूब खुश दिख रही थी । सो अनारको खुश होने लगी और नदी किनारे पेड़ों के नीचे 'घोर-घोर रानी—इत्ता-इत्ता पानी' खेलने लगी । हल्की-हल्की बारिश होने लगी थी, सो उसे खूब मजा आ रहा था ।

इतने में पास में कुछ हलचल-सी हुई। पेड़ों के बीच में एक जगह ऊपर से रोशनी गिरी और वहाँ रोशनी का एक गोल-सा घेरा बन गया। गरम-गरम-सी रोशनी। फिर उस जगह एक छोटा-सा बवंडर उठा और काफी सारी धूल उड़ी। ऐसा होते-होते सबकुछ थम गया और वहाँ एक बूढ़ा आदमी सोता हुआ दिखा। ऐसी ही हरकत और भी जगह होने लगी थी, आसपास। हर जगह हरकत थम जाती तो वहाँ दिखने लगते बूढ़े-बूढ़े लोग। कहीं कोई बुढ़िया सोई हुई रहती। अनारको इतना सब बड़े अचंभे से देख ही रही थी कि इतने में उसके सामने एक गाड़ी जैसी कोई चीज आ गई। अनारको के देखते-देखते गाड़ी का दरवाजा खुला और उसे लगा कि जैसे उसे गाड़ी के अंदर बुलाया जा रहा है। सो अनारको गाड़ी के अंदर जाकर बैठ गई। बैठकर अपनी टाँगों को पसार ही रही थी कि गाड़ी चलने लगी। गाड़ी की खिड़की से बूढ़े लोग अब भी दिख रहे थे, जैसे गाड़ी के साथ-साथ वो भी चल रहे हों या शायद उड़ रहे हों। अनारको ने बगल में देखा तो एक के बाद एक मील के पत्थर पार होते जा रहे थे। पर वे मील के पत्थर नहीं थे, क्योंकि उनके ऊपर साल लिखे थे। एक के ऊपर इतना-इतना साल। फिर इसके बादवाले पर इतना-इतना साल और ऐसे ही सब पर। अनारको को महसूस हुआ जैसे गाड़ी चलते-चलते दूरी



नहीं, समय तय कर रही है। अनारको ने खिड़की से देखा तो देखती है कि बूढ़े लोग खूब झल्ला रहे हैं और एक-दूसरे पर चिल्ला रहे हैं। कोई उधर कोने में उदास बैठा हुआ है, कोई हाथ-पैर हिलाकर किसी दूसरे को डाँट रहा है। कोई भी हँसता हुआ नहीं, खुश होता हुआ नहीं—रोता तक भी नहीं। बुड्ढे लोग कमजोर थे, सो ज्यादा लड़-झगड़ नहीं पा रहे थे—थक जाते थे। अनारको ने मन ही मन सोचा—चलो अच्छा है। अगर इनमें ताकत होती, फिर तो ये सत्यानाश ही कर डालते चारों तरफ।

अनारको यही सोचते-सोचते इत्ती खुश हो ही रही थी कि सत्यानाश दिख गया। खुश होने की कोशिश में गाड़ी काफी आगे चली गई थी, और अनारको ने खिड़की से बाहर देखा तो बूढ़े लोगों की जगह उनसे कम उम्र के लोग दिखने लगे। समझो कि पापा-जैसे लोग। अम्मी रहतीं तो कहतीं अन्नो, ये अंकल लोग हैं, चलो नमस्ते

करो ! 'अंकल लोगों' को नमस्ते करते-करते अनारको की सारी जिंदगी गुजरी थी, सो वह खिड़की के बाहर जरा खीझकर ही देख रही थी । वैसे बाहर खीझने के लिए बहुत कुछ था—खीजने के लिए भी और पता नहीं किस-किस के लिए । बाहर देखा तो सारे लोग ऐसे गंदे काम कर रहे थे कि मत पूछो । एक तरफ कुछ लोग दूसरों पर बम गिरा रहे थे और वहाँ से लगातार रोने की आवाज आ रही थी । इसके बावजूद कुछ लोग उन बमों को बना रहे थे, कुछ बमों को गिराने के लिए हवाई जहाज बना रहे थे । कुछ लोग ये बता रहे थे कि बम कैसे बनने चाहिए और उधर कुछ लोग यह चिल्ला रहे थे कि बम क्यों बनने चाहिए । और सब बड़े अच्छे-अच्छे दिख रहे थे—और उधर एक का चेहरा तो बन्दर-छाप मंजन के कैलेण्डर पर बने वनवासी राम जैसा था । सब अच्छे-अच्छे दिखते लोग ! अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए ! अनारको ने देखा, जो ज्यादा अच्छे कपड़े पहने होता था वह ज्यादा बदमाशी कर रहा था । अनारको को यह सब देखते-देखते एक साथ ऐसा-ऐसा लगने लगा कि वह समझ ही नहीं पा रही थी कि उसे कैसा लग रहा है । और फिर भी कैसा-कैसा लग रहा था बड़े जोरों से । अनारको ने इस बार सिर उठाकर देखा तो देखा, दूर ढेर सारे लोग थे । सब गंदे कपड़े पहने हुए । असल

में इन अच्छे कपड़ेवालों ने बम फेंकते हुए और इधर-उधर भागा-भागी करते हुए इतनी धूल उड़ाई थी चारों तरफ कि अनारको को साफ-साफ दिख ही नहीं रहा था कि वो कौन लोग हैं । सो हाथों को आँखों के दोनों तरफ ले जाकर खिड़की से सटाकर देखा तो वह उन्हें पहचानने लगी ।

अनारको ने बहुत-से लोग देखे थे ऐसे—सब उन जैसे लगते थे जो गर्मी की दोपहर में कहीं से आकर घर के गेट के बाहर बैठे रहते और जब अनारको उनको पीने के लिए गिलास भरकर पानी देने जाती तो हमेशा मुँह के पास हाथ ले जाकर कहते, "डाल दो गुड़िया ।" कभी गिलास को हाथ में नहीं लेते । अनारको ने देखा, बहुत सारे वैसे ही लोग अलग-अलग काम कर रहे थे । कुछ मकान बना रहे थे, कुछ कुएँ खोद रहे थे, कुछ कपड़े बना रहे थे, कुछ कोयला ढो रहे थे । पर इतना सब करते-करते बीच-बीच में वो भी गंदे काम कर रहे थे । कहीं कोई आदमी औरत को पीट रहा था और कहीं एक औरत दूसरी औरत से लड़ रही थी । अनारको ने सोचा, 'इन सारे लोगों का दिमाग खराब हो गया क्या ?' फिर उसे याद आया कनखजूरा, जो सोते समय कान के रस्ते घुसकर दिमाग खा जाता है । अनारको ने सोचा, 'कहीं इनके दिमाग में कनखजूरा तो नहीं घुस गया सोते-सोते !' उसने और सोचा तो उसे लगा कि इतने सारे लोगों में तो नहीं घुस

सकता कनखजूरा । फिर जरूर कोई और बात होगी । अनारको ये सब सोच रही थी और वो भी तब, जबकि उसे अब भी कैसा-कैसा लग रहा था । तो उसे बहुत ज्यादा समय लग गया सोचने में । तब तक गाड़ी काफी आगे बढ़ गई थी । अनारको ने बाहर खिड़की से देखा तो उसे अपने-जैसे लोग दिखने लगे । अपने-जैसे, किंकु, गोलू-जैसे । उनमें कुछ के मुँह काले थे, कुछ के गोरे । किसी की आँखें गोल-गोल थीं तो किसी की तिरछी । कुछ मोटे-मोटे थे, कुछ दुबले । पर थे सभी उस-जैसे । उसने देखा, कुछ इधर-उधर दौड़ रहे थे, कुछ ये देख रहे थे कि आमने-सामने आतीं दो चींटियाँ कैसे टाँग उठाके मिलती हैं । कुछ आम की कैरी तोड़ रहे थे और कुछ लेटे-लेटे सपने देख रहे थे बड़े गौर से ।

अनारको ने अपने पेट पर हाथ रखा तो उसे लगा—अब साँस लेना आसान हो रहा है । उधर कुछ लोग लड़-झगड़ भी रहे थे । पर वह कुछ ऐसा था कि बाल्टी भरके पानी रखा हो और एक-दूसरे पर उँड़ेल दिया । पानी खत्म, झगड़ा खत्म । और ज्यादा गुस्सा हो तो एक-दो बार पैर से दूसरे की तरफ पानी छिटका दो । बस । अब तो अनारको खिड़की से एकदम सट गई और बाहर देखने लगी । इतना सट गई कि कोई खिड़की के उधर से देखे तो नाक बिलकुल चपटी-सी लगे । उसने फिर उनसे भी छोटे-छोटे लोग देखे । कुछ मुश्किल से चल पा रहे थे, कुछ इस बात पर बेहद हँस रहे थे कि खिड़की

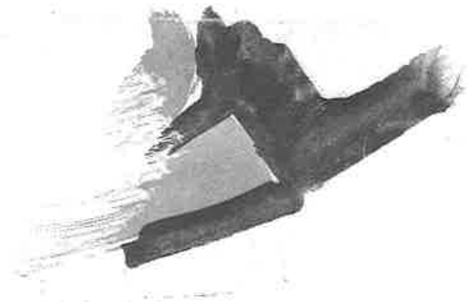
से सूरज की एक पतली-सी रोशनी उनकी छोटी उँगली पर पड़ जाती थी बार-बार, कुछ पेट के बल लेटे हाथ पर सिर रखे सोच रहे थे । सब एक-दूसरे के गले लग रहे थे, एक-दूसरे के बालों पर हाथ फेर रहे थे, पेट सहला रहे थे । और कुछ लोग बैठे-बैठे रो रहे थे । अनारको ने सोचा, शायद उन्होंने देखा है कि कैसे लोग दूसरों पर बम फेंककर मारते हैं, सुनी होगी मरने की आवाज—शायद इसीलिए रो रहे हैं । इतने में गाड़ी आगे बढ़ चुकी थी और अब तो लोग बिलकुल नन्हे-नन्हे हो गए । और सब एक-जैसे दिखते थे । इतने एक-जैसे दिखते थे कि अनारको किसी एक पर नजर ही नहीं गड़ा पा रही थी । खैर, उसने देखा कि यहाँ तो बहुत सारे लोग रो रहे थे—ऐसे रो रहे थे जैसे बहुत दर्द में हों और कुछ बताना चाहते हों और समझा न पाएँ । अनारको को लगा जैसे वह उनका दर्द समझ



पा रही है, थोड़ा-थोड़ा।

वह सोचने ही लगी थी कि गाड़ी जब आगे जाएगी तो कैसे लोग दिखेंगे, कि वह एक गहरे गड्ढे में गिरने लगी। अरे, गड्ढा तो इतना गहरा था कि पूछो मत और खूब अँधेरा भी। अनारको गिरती ही जा रही थी और उसे डर लगने लगा। सो उसने जैसे ही आँखें बंद करने की कोशिश की, उसकी आँखें खुल गईं। हड़बड़ाकर उठ बैठी। एक साथ अनारको को बहुत अजीब-अजीब महसूस होने लगा। सो वह झटके से बिस्तर से उठी और सीधे नहाने चल दी।





अनारको का पाँचवाँ दिन

…उसे ऐसा लग ही रहा था कि अभी जमीन में दरारें पड़ेंगी, धीरे-से फूटेगी जमीन और ढेर सारी चिड़ियाँ निकलेंगी। उसे ऐसा लग ही रहा था कि अभी खुश होने का समय आएगा कि अम्मी ने उसे हिलाया, "अन्नो, चल अब उठ। इम्तहान की तैयारी करनी है, पढ़ने बैठ जा।" अनारको को नींद में अम्मी की आवाज ऐसे सुनाई दी जैसे बहुत दूर से आ रही हो। उसे लगा, ये आवाज भी सपने का ही हिस्सा होगी। पर इतने में अम्मी ने फिर से उसे झकझोरा और वह चौंककर उठ गई। अँगड़ाई लेते हुए कहा, "अम्मी, मैं इम्तहान के लिए तैयारी नहीं करूँगी।" इस पर अम्मी ने कहा, "अरे इम्तहान की तैयारी नहीं करेगी ? जाकर देख आ, गोलू, बिट्टू, फुलपत्ती सब तैयारी कर रहे होंगे।" अनारको ने गर्दन को जरा टेढ़ी करके पूछा, "अच्छा अम्मी, वो लोग सब तैयारी करेंगे तो क्या हो जाएगा ?" अम्मी

तो जैसे जवाब देने को तैयार बैठी हों—"फिर वो लोग सब पास हो जाएँगे और तू फेल हो जाएगी।" अनारको को बहुत देर से जम्हाई आ रही थी। उसने हल्के-से जम्हाई ली और कहा, "अच्छा अम्मी, पास होके वे लोग क्या करेंगे ?"

अम्मी—वो अगले साल ठीक से तैयारी करेंगे तो फिर पास हो जाएँगे।

अनारको—फिर क्या करेंगे ?

अम्मी—फिर उसके अगले साल तैयारी करेंगे तो फिर पास हो जाएँगे।

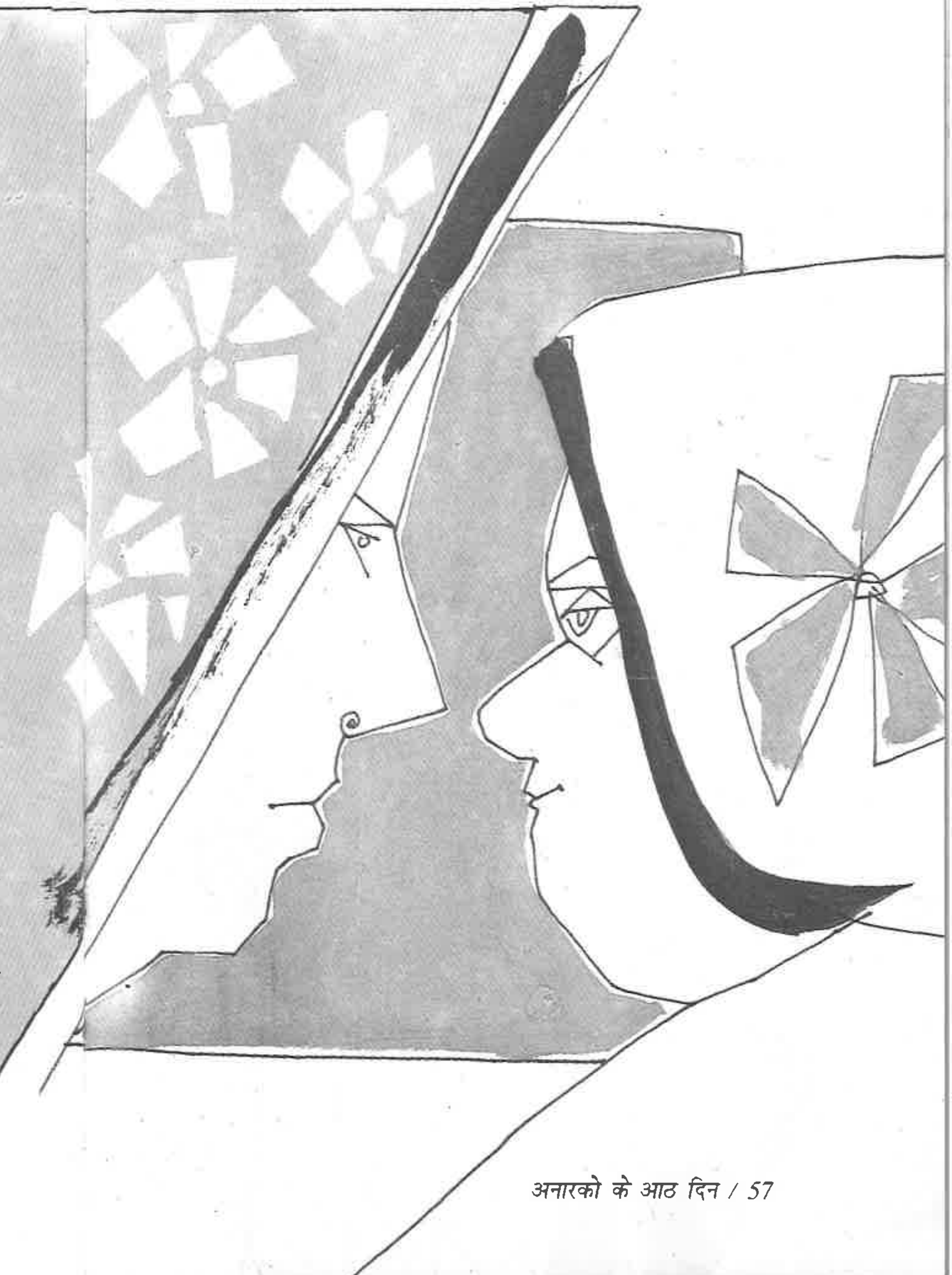
अनारको—फिर क्या करेंगे ?

अम्मी—फिर पास करते-करते उनको अच्छी नौकरी मिल जाएगी।

अनारको—फिर क्या करेंगे ?

अम्मी—फिर उनके पास गाड़ियाँ होंगी, घर होंगे, नौकर होंगे···

अनारको ने अम्मी को बीच में ही रोकते हुए पूछा, "पर अम्मी, ये सब तो होगा पर वो करेंगे क्या ?" अम्मी अब तक काफी परेशान दिख रही थीं, सो उन्होंने हल्के हाथ सिर पीट लिया और खीझ के साथ बोलीं, "करेंगे क्या—खाएँगे, पिएँगे, आराम से रहेंगे, काम करेंगे, सोएँगे···"



अनारको ने दूसरी बार उनको बीच में रोका और झट कह दिया, "पर अम्मी, ये सब तो मैं फेल होके भी कर सकती हूँ।" अम्मी काफी चकरा गईं और चकराते-चकराते बोलीं, "फेल होके ये सब कैसे करेगी ?" अनारको ने अपने हाथों को अपनी गोद में रखा और कहना शुरू किया, "मैं फेल होकर पढ़ाई छोड़ दूँगी। फिर ढेर सारे गुब्बारे ले आऊँगी दुकान से। फिर उनको



फुला-फुलाकर बाँधूँगी धागे से। फिर एक लकड़ी लूँगी और उसमें आड़ी करके एक और लकड़ी बाँध दूँगी रस्सी से। फिर गुब्बारों को लकड़ी पर लटकाकर उनको लेकर बेचूँगी। घूम-घूमकर। ये तो मेरा काम हुआ। फिर बेचने से जो पैसे मिलेंगे, उनसे खाऊँगी चने-मुरमुरे। शाम को खेलूँगी और रात को सो जाऊँगी—बस !" अनारको ने हल्की-सी ताली भी बजा दी।

इधर अम्मी तो खूब चकरा रही थीं। सो उन्होंने दोनों हाथों से अनारको का कंधा जोर से पकड़कर कहा, "पागल लड़की, तुझे मालूम भी है कि तू क्या बक रही है ? तू जानती भी है कि तुझे क्या करना है ?"

अनारको ने अम्मी के हाथ अपने कंधे से हटा दिए और कहा, "अम्मी, कोई नहीं जानता कि क्या करना है ? सबको मालूम है कि कुछ न कुछ करना है सो कुछ न कुछ करते रहते हैं।"

अब कोई माने न माने पर अम्मी फिर से चकरा गईं। ऐसी चकरा गईं कि कुछ बोल ही नहीं पाईं। इतने में अनारको ने जैसे बात को बदलते हुए पूछा, "अच्छा अम्मी, ये कौन तय करता है कि कुछ लोगों को पास होना है और कुछ लोगों को फेल होना है ?"

अम्मी ने सँभलकर कहा—"करते होंगे कोई !"

अनारको—अच्छा, फिर ये बताओ कि ये तय करना

क्यों जरूरी है कि कोई पास होगा और कोई फेल ?

अम्मी—ताकि ये पता चले कि कौन बढ़िया है ।

अनारको कुछ और ही पूछना चाहती थी कि वह रुक गई । उसे लगा—एक दूसरा सवाल पूछना बहुत-बहुत जरूरी है । सो उसने पूछा, "अम्मी, यह कौन तय करता है कि स्कूल में इम्तहान होना चाहिए ?"

अम्मी ने जैसे उदास होकर कहा, "करते होंगे कोई !"

अनारको को झक-से लग गया कि अम्मी ने एक ही चीज दूसरी बार कही थी, सो उसने जरा खीझकर कहा, "अम्मी, तुम बार-बार क्यों कहती हो कि तय करते होंगे कोई ! पिछली बार जब हमने पूछा था कि ये कौन तय करता है कि पापा हफ्ते में छह दिन आफिस जाएँगे और सिर्फ एक दिन छुट्टी पर होंगे तब भी तुमने यही कहा था—करते होंगे कोई !" फिर अनारको को लगा कि अम्मी एकदम उदास-सी हो गईं । सो उसने कहा, "अच्छा अम्मी, छोड़ो । मैं तुम्हें उस दिन की बात बताती हूँ, इम्तहान के बारे में ।" अनारको ने देखा, बात के बदलने पर अम्मी का मन उनके चेहरे पर आकर बहल-सा गया । पर अम्मी ध्यान से सुन तो रही थीं, सो उन्होंने झट पूछा—"कौन-सा दिन, किस दिन की बात ?"

अनारको—उस दिन की बात ।

अम्मी—कब की ? कितनी तारीख की ?

अनारको—ओफ्फो अम्मी, अगर मैं तुम्हें तारीख बता दूँ, तो क्या तुम्हें मेरी बात ज्यादा समझ आएगी ?

अम्मी ने धीरे-से लंबी साँस छोड़ी और कहा—"अच्छा बोल क्या हुआ था उस दिन ?"

अनारको—मैं जंगल में गई थी ।

अम्मी—कौन-सा जंगल ? क्या नाम था उस जंगल का ?

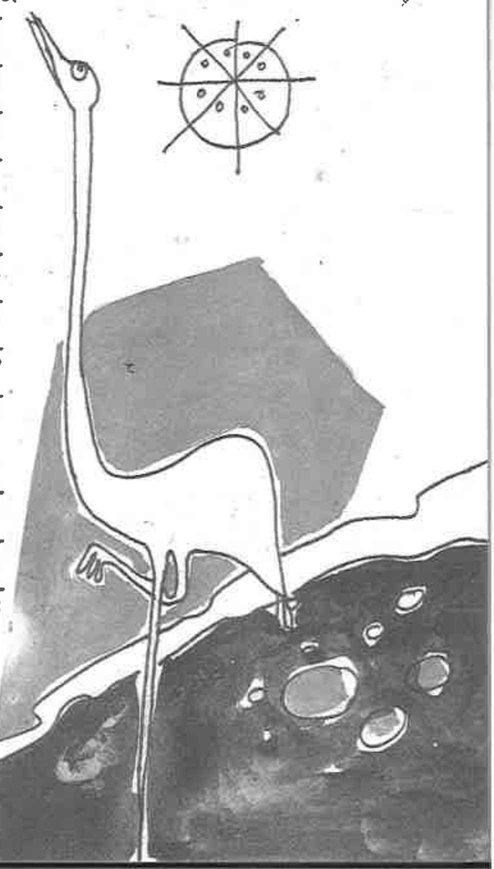
अनारको—अच्छा अम्मी, ये क्यों जरूरी है कि मैं जंगल का नाम बताऊँ । तुम तो बस उस दिन की बात सुनो ।

और वह जरा हिल-डुलकर ठीक से बैठ गई बिस्तर पर और सुनाने लगी—

"उस दिन जंगल में ढेर सारे जानवर थे—शेर, चीता, गैंडा, बकरी, ऊँट, भैंस, हिरन, खरगोश, और पता नहीं कितने-कितने जानवर । सारे जानवर खूब हिलमिलकर रहते थे । तो उस दिन एक आदमी उस जंगल के किनारे आया और पूछने लगा, 'क्यों भाई, तुममें से बढ़िया जानवर कौन-से हैं ?' इस पर सब जानवरों ने कहा, 'हम सब बढ़िया हैं । कोई बढ़िया गाता है, तो कोई बढ़िया दौड़ता है, कोई तैरने में उस्ताद है तो कोई पेड़ पर चढ़ने में ।' इस पर उस आदमी का चेहरा नीला-नीला होने लगा ! फिर उसने अपने झोले में से टीन का एक

डिब्बा निकाला और एक बटन दबा दिया । फिर क्या था ! डिब्बे में से गहरा नीला धुआँ निकलने लगा, जोर-ज़ोर से । फिर धुआँ जंगल की ओर बढ़ने लगा, जमीन छूते हुए । फिर जंगल के पास पहुँचकर पेड़ों के ऊपर चढ़ने लगा, पेड़ों के बीच से घुसने लगा, पत्तों में से छनने लगा और ऐसे ही देखते-देखते पूरे जंगल में नीला-नीला धुआँ भर गया । आदमी ने तब तक अपना झोला उठाया और चल दिया वहाँ से । जाते-जाते एक गंदी-सी हँसी छोड़ गया उस जगह पर । थोड़ी देर में सारा धुआँ जैसे जमीन के अंदर धँस गया और जंगल फिर से साफ हो गया । लेकिन अचानक सब जानवर चिल्लाने लगे—'मैं बढ़िया जानवर हूँ', और एक-दूसरे को कहने लगे घूम-घूमकर, 'मैं तुमसे बढ़िया जानवर हूँ ।' ऐसे ही सबमें बहुत हल्ला होने लगा । इतने में उनको बगुला दिख गया । चुपचाप नदी की ओर जा रहा था मछली पकड़ने । जानवरों ने उसे आवाज लगाई, उसके पास गए और कहा, 'बगुला महाराज, आप ही तय कर दो कि हममें से कौन बढ़िया जानवर है ?' बगुला रुक गया और ऊपर आसमान की ओर देखने लगा । थोड़ी देर के बाद कहा, 'अच्छा, चलो कर देते हैं ।' बगुला जानवरों के पास गया तो बगुले की बड़ी आवभगत हुई ।

बगुले ने जरा अपने बदन को झकझोरा तो सारे जानवर भाग-भागकर उसके सामने आ गए और बैठ गए जमीन पर । इधर बगुला तो ऊपर की ओर देखने में लगा था । सभी जानवर अपनी-अपनी जगह बैठे-बैठे दाएँ और बाएँ खिसक रहे थे, जैसे चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हों, 'बगुले जी, मैं यहाँ हूँ । आप मुझे वहाँ कहाँ ढूँढ़ रहे हैं !' सो बगुले ने अपने-आपको एक बार फिर झकझोरा, गर्दन नीची की, फिर भारी आवाज में बोलने लगा—'नहीं, मैं तुम लोगों को वहाँ नहीं ढूँढ़ रहा था, मैं आसमान देख रहा था ।' इस पर सभी जानवर एक साथ अपनी ठुड्डी को अपने सामनेवाले दोनों पैरों पर रखकर अपने चेहरे को कुछ आगे ले गए । ऊपर से आँखों को चमकाने लगे सबके सब, जैसे कह रहे हों बगुले को—'आप आऽऽ-समाऽऽऽन देख रहे थे ?' जैसे कोई बहुत बड़ा काम कर रहा हो



बगुला । इतने में बगुला गर्दन नीची करके कहने लगा—'अच्छा, अभी फैसला करते हैं ।' सारे जानवर बिलकुल चुप हो गए और आँखों में खूब चमक भरकर बगुले को देखने लगे । बगुले ने अपनी गर्दन ऐसे घुमाई जैसे सारे जानवरों को देख रहा हो । पहले दाएँ से बाएँ और फिर बाएँ से दाएँ । और देखने के बाद आसमान की ओर देखने लगा । इस बार तो उसने अपनी एक टाँग को दूसरी टाँग पर चढ़ा भी लिया था । जानवरों को लगा, इस बार तो बगुला बहुत देर तक आसमान ताकेगा, सो अपनी-अपनी जगह पर हुसहुसाने लगे । इतने हुसहुसाए कि एक साथ खूब सारी हुसहुसाहट हुई । सो बगुले ने टाँगों को ठीक से रखा और देखते-देखते ही कहने लगा, 'मेरे विचार से हिरन और भैंस सबसे बढ़िया जानवर हैं ।'

बगुले का इतना बोलना था कि जानवरों में खलबली मच गई । सारे जानवर खूब शोर मचाने लगे और इधर-उधर भागा-दौड़ी करने लगे और जोर-जोर से चक्कर काटने लगे । हाँ, सिर्फ हिरन और भैंस चुपचाप थे । दोनों एक कोने में खड़े-खड़े झेंप रहे थे बुरी तरह । भैंस तो ज्यादा ही झेंप रही थी । इधर जानवर हल्ला मचाए जा रहे थे—'धाँधली हुई है, धाँधली हुई है !' थोड़ी देर में हल्ला थोड़ा कम हुआ तो चीता आगे बढ़कर कहने लगा, 'हिरन कैसे सबसे बढ़िया हो सकता है ? मैं उससे बढ़िया

हूँ । मैं उससे तेज भाग सकता हूँ ।' गधे ने कहा, 'मेरी आवाज भैंस से ज्यादा दूर जाती है । मैं भैंस से बढ़िया हूँ । फिर यह क्यों नहीं बताया कि मैं सबसे बढ़िया हूँ ?' फिर अपनी बात के वजन को बढ़ाने के लिए जोर-जोर से रेंकने लगा । अभी पिछले दिनों गैंडे के साथ एक छोटा हादसा हो गया था । उसकी एक ही सींग था और वह भी देखने में नाक जैसी लगती थी । सो गैंडा अक्सर भूल जाता था कि वह उसकी नाक है या सींग । तो ऐसे ही किसी भूल की घड़ी में जब बादल कड़क रहे थे, गैंडे ने एक पेड़ को गिराने के लिए टक्कर मारी और नाक (जो कि असल में उसकी सींग थी) को बचाने के चक्कर में अपने सारे दांत तोड़ लिए । अब वह 'स' नहीं बोल सकता था । पर वह भी चुप रहनेवाला नहीं था सो आगे बढ़कर बोलने लगा, 'हिरन की दो फींगें हुईं तो क्या ? मेरी एक फींग उसकी दो फींगों से ज्यादा मजबूत है । फिर मैं फबफे बढ़िया हुआ कि नहीं ?' ऊंट ने खूब जोर से गर्दन हिलाते हुए कहा, 'मेरे आगे कोई बीन बजाए तो मैं भैंस से ज्यादा पगुराकर दिखा दूँगा । किसी भी दिन आजमा लो । फिर मुझे होना चाहिए सबसे बढ़िया जानवर ।' जानवर एक के बाद एक बोले जा रहे थे, और बगुला था कि उसने अपना चेहरा ऐसा बना लिया था जैसे कुछ सुनाई ही नहीं दे रहा हो उसे । सो धीरे-धीरे सब चुप हो गए ।

अब बगुले ने कहा—'तुम लोगों ने मुझे तय करने को कहा था न कि कौन बढ़िया जानवर है ?'

थोड़े-से जानवरों को छोड़कर बाकी सबने कहा, 'हाँ, हाँ ।'

फिर बगुले ने कहा, 'फिर मैं तो अपने हिसाब से तय करूँगा न ?'

जानवरों ने कहा, 'हाँ, हाँ ।' थोड़े-से जानवरों को लग रहा था कि बाकी जानवरों को इतनी जल्दी बगुले की बात पर 'हाँ-हाँ' नहीं करनी चाहिए, नहीं तो बगुला ऐसे ही बात करते-करते सबको चुप करा देगा । पर उनकी बात कौन सुनता । बगुले ने आगे कहा, 'मैं जब अपने हिसाब से तय करूँगा तो मैं उन्हीं को सबसे बढ़िया बताऊँगा जो मुझे फायदा पहुँचाते हों ।'

जानवरों ने कहा, 'हाँ, हाँ ।'

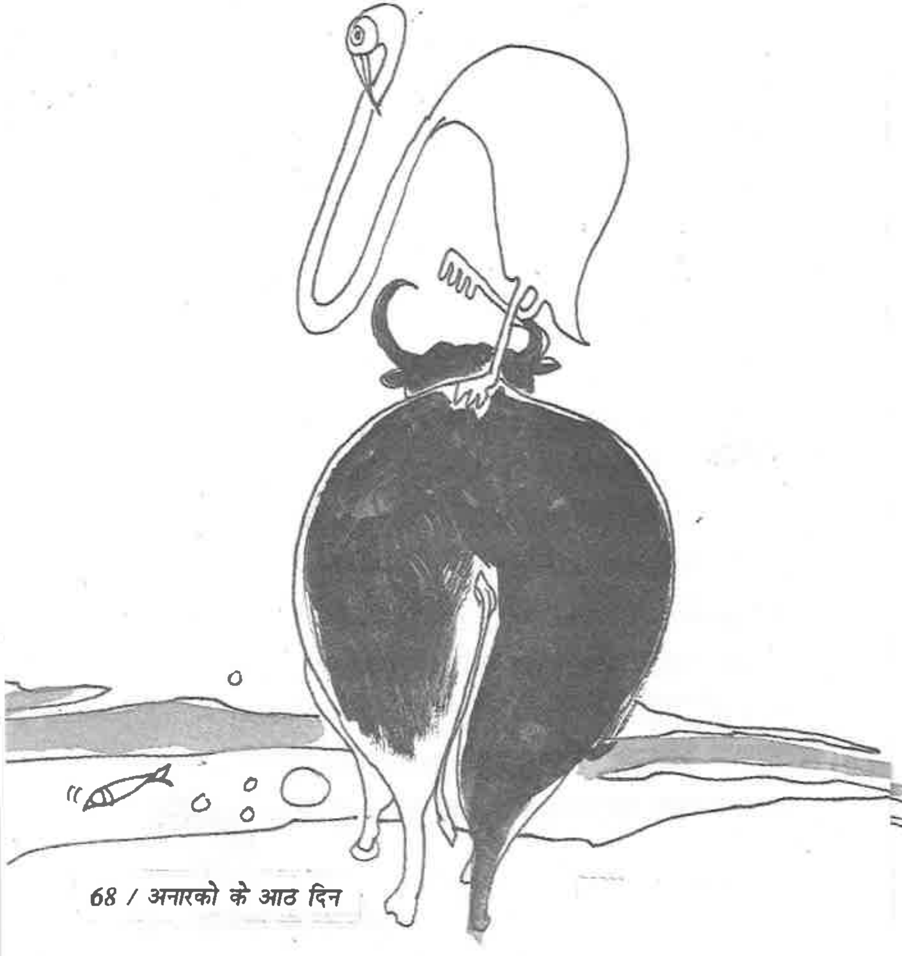
बगुले ने झट अपनी बात की एक और कड़ी जोड़ दी, 'मैंने हिरन और भैंस को सबसे बढ़िया इसलिए कहा क्योंकि वे मुझे फायदा पहुँचाते हैं ।'

इस बार जानवरों की तरफ से हाँ-हाँ नहीं हुई, दूसरी बात हुई । सब एक साथ पूछने लगे—'पर ये तो बताओ, हिरन और भैंस तुम्हें फायदा कैसे पहुँचाते हैं ?' बगुले ने जैसे सोचते हुए कहा, 'हिरन मुझे परेशान नहीं करता । वही एक जानवर है जो कभी पानी पीने नदी पर नहीं

जाता । सो जब मैं मछली पकड़ रहा होता हूँ तो वही एक है जो मछलियों को भगा नहीं देता मुझसे दूर । और भैंस मेरे काम आती है । जब वह नदी या तालाब में पड़ी-पड़ी सो रही होती है, तो उसकी पीठ पर बैठे-बैठे मैं मछली पकड़ता हूँ ।'

एक साथ सब जानवर एकदम परेशान-से लगने लगे । नहीं, सब जानवर नहीं । एक तरफ हिरन और भैंस खड़े-खड़े लंबी साँस खींच रहे थे, ताकि उनका सीना जरा फूला-फूला लगे । कुछ ज्यादा ही तन रहे थे दोनों । सो जानवरों ने उनकी तरफ बढ़कर हिरन से पूछा, 'क्यों भई हिरन, तुम क्यों नहीं जाते हो पानी पीने ?' हिरन को इस सवाल का जवाब देने में मुँह खोलना पड़ा और उसकी सारी हवा फुस्स से निकल गई और वह पिचक-सा गया । पर सँभलकर कहने लगा, 'अरे भई, बहुत पहले जाता था । पीता था पानी नदी का । फिर बाद में पता नहीं क्यों कुछ इन्सान लोग कहने लगे कि हिरन ओस चाटकर प्यास बुझाता है । और बात सब तरफ फैल गई । अब आप ही बताओ मैं कौन-सा मुँह लेकर पानी पीने जाऊँ । बस ओस चाटता रहता हूँ । वक्त तो बहुत बरबाद होता है और प्यास भी ठीक से नहीं बुझती । पर करें क्या, मुझे तो वैसा ही दिखना पड़ेगा जैसा मुझे दिखना चाहिए न ।' इस पर जानवरों के साथ दो बातें हुईं । कुछ तो समझ गए

कि हिरन ने बड़े पते की बात की है । सो कुछ देर तक सारे जानवरों पर एक चुप्पी की नींद छा गई । थोड़ी-सी हवा और चलती तो शायद सब सो ही जाते । इतने में गैंडा अचानक चौकन्ना हो गया और कहने लगा, 'बगुले महाराज, तुम भैंफ पर ही क्यों बैठते हो ? दूफरे जानवरों



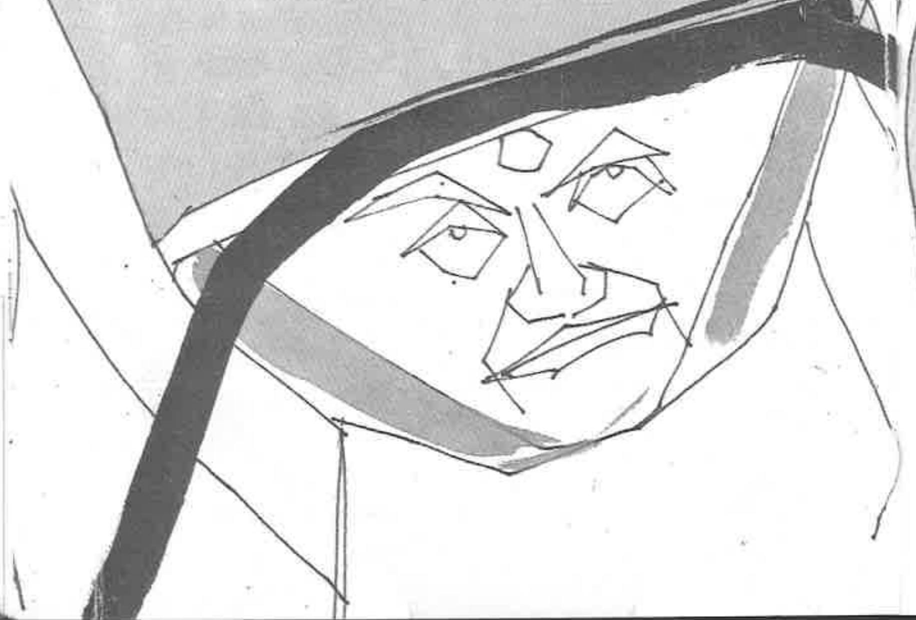
पर बैठकर मछली नहीं पकड़ फकते ?' अब बाकी जानवर भी चिल्ला उठे, 'हाँ-हाँ, सिर्फ भैंस पर ही क्यों ?' उधर ऊँट तो सचमुच पगुराने लगा था जोर-जोर से बिना किसी के बीन बजाए ही ! बगुला इस सवाल के लिए तैयार ही नहीं था, सो मुश्किल में पड़ गया । कुछ देर तक मुश्किल में पड़ा रहा । फिर जरा झेंपकर शरमाते हुए बोला, 'क्योंकि भैंस की काली चमकती पीठ पर मेरा गोरा बदन फबता है !'

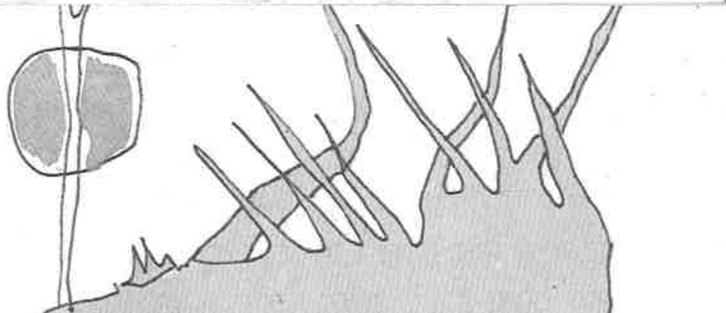
बगुले के इस जवाब का असर जानवरों पर ऐसे हुआ जैसे वो सोच रहे थे कि सुनेंगे 'मदरास' और बदले में उन्हें सुना दिया हो 'देहरादून' । बस टन्न-से चुप हो गए । इससे पहले कि जानवर देहरादून की चपेट से बाहर निकलते, बगुला लंबे पाँव चलते वहाँ से आगे बढ़ गया । बगुला चल तो तेज रहा था पर दिख ऐसे रहा था कि उसे कोई जल्दी नहीं है । फिर क्या, मैं बगुले को देखती रही और उधर बगुला मछली पकड़ने में लग गया और मैं उस जगह से वापस आ गई ।" अनारको ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा ।

अम्मी आँख फाड़े, मुँह खोले यह सब सुन रही थीं । अनारको ने बोलना खत्म किया, फिर भी अम्मी का चेहरा वैसा ही बना हुआ था । सो अनारको ने दोनों हाथों से अम्मी के गाल छुए । और अम्मी का चेहरा बिलकुल बदल

गया । अगर अनारको को मालूम होता, इतना बदल जाएगा तो शायद न छूती । खैर, अम्मी ने तब तक खीझते हुए कहा, "पागल लड़की; दिन में भी सपने देखती रहती है । पता नहीं क्या-क्या बात करती है । और तेरी इस कहानी से इम्तहान का क्या वास्ता ?" अनारको ने झट जवाब दिया, "अम्मी, तुम कुछ नहीं समझतीं, बहुत वास्ता है, जरा सोचो तो ।"

बस इतना बोलना था कि अम्मी फिर से चकरा गईं । साफ था कि यह अम्मी के चकराने का दिन था । इधर अम्मी चकरा रही थीं, उधर अनारको स्कूल जाने की तैयारी में लग गई । उसने मन ही मन हिसाब लगाया, अम्मी ने कुछ समझा नहीं भी हो, पर आज के दिन तो इम्तहान की तैयारी से छुट्टी मिल ही गई । और अनारको खुश होने लगी ।





अनारको का छठा दिन

सबको मालूम था कि भूतों के बारे में गोलू जितना जानता है, उतना पूरी दुनिया में और कोई नहीं जानता । फुलपत्ती तो यहाँ तक कहती कि गोलू भूतों के बारे में जितना जानता है उतना तो भूत भी नहीं जानते । फुलपत्ती तो खैर सबकुछ बढ़ा-चढ़ाकर कहती थी, खासकर जब वह गोलू के बारे में हो । लेकिन बात तो सही थी—गोलू वाकई भूतों के बारे में बहुत कुछ जानता था ।

आज खाने की छुट्टी में अनारको ने देखा कि गोलू उधर मैदान के किनारे खड़े होकर खूब हाथ हिला-हिलाकर ढेर सारे साथियों को कुछ बता रहा था । आँखें खूब गोल-गोल घुमा रहा था । बीच-बीच में मुँह से कुछ आवाज़ें भी निकाल रहा था । अनारको समझ गई कि गोलू सबको भूतों के बारे में बता रहा है । उसने सोचा, आज गोलू से भूतों के बारे में जरूर पूछेगी । पीछे से एक और सोच धीरे से

आ रही थी—हो सकता है गोलू उसे कोई सच्ची-मुच्ची का भूत दिखा भी दे। ऐसा सोचते-सोचते ही उसके बदन में जोर से सिरसिरी होने लगी—एकदम ठंडी-सी। अनारको को बहुत मजा आया। अनारको को बीच-बीच में डरने में मजा आता है।··· सच्ची-मुच्ची का डर। जब वह छोटी थी तो अम्मी उसे हमेशा सोने से पहले डरा दिया करती थीं—'सो जा, नहीं तो दरवाजे के पीछे दाढ़ीवाला बुड्ढा खड़ा है, पकड़के ले जाएगा।' अम्मी कहती थीं और अनारको आँखें बंद कर लेती थी। एक रात अम्मी के चले जाने के बाद अनारको दबे पाँव दरवाज़े तक गई। फिर कुर्सी पर चढ़कर चिटकनी खोली। उसे याद है, दरवाजा खोलने के पहले उसे कुछ डर-सा लगा था। रुक गई थी वह थोड़ी देर। फिर झटके से दरवाजा खोला था उसने। पर बाहर झाँककर देखा तो कहीं कुछ नहीं और थोड़ा निकलकर ठीक से देखा तो भी कहीं कुछ नहीं। सारा मजा फुस्स हो गया। उस रात के बाद अनारको समझ गई थी कि दरवाजे के पीछे कोई दाढ़ीवाला बुड्ढा खड़ा नहीं होता। वह यह भी समझ गई कि अम्मी बहुत झूठ बोलती हैं। पर हाँ, दरवाजा खोलने के पहले वह जितना डरी थी, उससे उसे मजा खूब आया था। पर कोई-कोई डर ऐसा भी होता है कि उसमें मजा नहीं आता।

एक बार अनारको सपने में डर गई थी। सपने में उसने

देखा कि उसके स्कूल का गेट बड़ा-सा मुँह बन गया है। 'आऽऽऽऽऽ' करके खोले हुए मुँह में दाँतों की जगह एक-एक मास्साब हैं। फिर उसने देखा, उसके बहुत सारे साथी उस मुँह के अंदर चले गए। फिर मुँह धीरे-धीरे बंद हो गया। थोड़ी देर के लिए बिलकुल अँधेरा हो गया। फिर अनारको ने देखा, उसके साथी मुँह के पीछे गले से नीचे उतर रहे हैं। फिर ऐसे ही सबके-सब बड़े-से पेट में पहुँच गए। चारों तरफ कैसा लिजलिजा लग रहा था। उसके सब साथियों की आँखें कैसी बदल रही थीं।··· सपना तो यहीं खत्म हो गया था, पर सुबह टट्टी करते-करते अनारको ने उसे याद किया तो डर लगने लगा। एक अलग तरह का डर, जिसमें कोई मजा नहीं था।

पर भूत देखने में तो मजा आएगा। अनारको यही सोच-सोचकर खुश हो रही थी। ऐसा ही सोचते-सोचते चार घंटियाँ पता नहीं कैसे खत्म हो गईं। अनारको ने हमेशा देखा है, जब भी वह उस ओर ध्यान नहीं देती, घंटियाँ जल्दी-जल्दी खत्म हो जाती हैं। कोई बात जरूर होगी इसमें। इधर छुट्टी की घंटी बजी और अनारको लपककर गोलू के पास पहुँच गई। उधर से किंकु भी अनारको के पीछे आ गया। कक्षा से निकलते ही अनारको ने पूछा, "क्यों गोलू, तूने भूत देखा है?" गोलू ने कहा, "हाँ, बहुत बार देखा है।" "कैसेवाले भूत देखे तूने?"

अनारको ने पूछा । गोलू ने बेझिझक गिनाना शुरू किया, "कालेवाले, लंबे-लंबे दाँतोंवाले, उल्टे पाँवोंवाले, लंबी नाकवाले, बिना नाकवाले, लाल-लाल आँखोंवाले और पता नहीं कैसे-कैसे !"

इसके बाद अनारको गोलू से बड़ी देर तक भूतों के बारे में पूछती रही । किंकु भी साथ था, पर उसे ज्यादा मजा नहीं आ रहा था । सो वह अनारको के बालों की चोटी बनाने में लगा था । गोलू ने अनारको को भूतों के बारे में बहुत कुछ बताया । उसने बताया कि लोग जब मर जाते हैं तो वो भूत बन जाते हैं । भूत बनकर हवा में उड़ते रहते हैं, पेड़ों पर बैठे रहते हैं या मन किया तो पानी में डुबकी लगाते हैं । उनके हाथ-पैर, पेट-छाती, मुँह सब होते हैं, पर न तो कोई उनको देख सकता है और न ही छू सकता है । जब कोई भूत अपने को दिखाना चाहे, तभी उसे कोई देख सकता है । नहीं तो गलती से कोई भूत किसी से टकराकर निकल भी जाए, तो भी पता न चले । इतना सुनकर अनारको सोचने लगी थी कि वह जब भूत बन जाएगी, तो कैसा होगा ? हवा उसके पेट में से होकर बहेगी या आर-पार । फिर उसे कैसे पता चलेगा कि कहाँ उसके हाथ हैं और कहाँ उसके पैर । 'मेरा मन कहाँ होगा उस समय ?' अनारको यही सोचते-सोचते घबराने लगी थी । इतने में गोलू ने उसे बताया कि भूत एक-दूसरे को या अपने-आपको छू सकते हैं । फिर अनारको को कुछ ठीक-ठाक लगा था । बाद में गोलू ने बताया कि भूत हमेशा नंगे रहते हैं । सिर्फ जब उन्हें किसी को डराना होता है तो सड़क के किनारे से कोई चीथड़ा उठाकर पहन लेते हैं । नहीं पहने तो उन्हें शर्म आती है । किंकु इस पर खूब हँसने लगा था । पर अनारको याद करने में लगी थी कि आज उसने सड़क के किनारे कितने चीथड़े पड़े देखे थे । चीथड़ों को अब वह नई नजर से देखने लगी थी । उधर गोलू बताता चला जा रहा था । उसने बताया कि भूतों को कभी भूख नहीं लगती । हाँ, पर एक बार उसने अस्पताल के चीरघर के पीछे एक भूतनी को देखा था । वह एक आदमी का कटा हुआ हाथ चबा-चबाकर खा रही थी । लेकिन गोलू समझ गया था कि वह सिर्फ उसको डराने के लिए चबा रही थी ।

भूतों का काम सिर्फ लोगों को डराना होता है, ये बात अनारको को जँची नहीं—ये भी क्या जिंदगी है कि बस सबको डराते रहो ।··· भूत न हुआ, पुलिस का सिपाही हो गया ! पर गोलू को भूतों के बारे में कोई उल्टी बात सुनना पसंद नहीं, सो वह बोलता गया—जब भूतों को अपने नाप का चीथड़ा नहीं मिलता है, तो वो जानवर बनकर लोगों को डराते हैं । कोई बिल्ली बन जाता है,

कुछ कुत्ते बन जाते हैं, कुछ कौए बन जाते हैं। वैसे जब जानवर मर जाते हैं तो वो भी भूत बन जाते हैं। जानवरवाले भूत। जब पेड़ मर जाते हैं तो वो बन जाते हैं पेड़ोंवाले भूत। फिर पेड़ोंवाले भूतों के जंगल में घूमते हैं शेरवाले भूत, हिरनवाले भूत, गैंडेवाले भूत और ऐसे ही सब जानवरों के भूत। कभी-कभी आदत की वजह से शेरवाले भूत आदमीवाले भूतों को खा जाते हैं। पर उससे कोई फर्क नहीं पड़ता, आदमीवाला भूत फिर से जिंदा होकर पहले जैसा भूत बन जाता है।

गोलू जानवरोंवाले भूतों के बारे में और भी कुछ बतानेवाला था कि अनारको ने बीच में ही रोक दिया। आज अनारको को सिर्फ आदमीवाले भूतों में दिलचस्पी थी। सो उसने पूछा—"गोलू, तू मुझे भूत दिखा सकता है, सच्ची-मुच्ची का भूत ?" गोलू को सोचना भी नहीं पड़ा, "हाँ, जरूर", उसने कहा, "रात के बारह बजे के बाद तालाब के पासवाली इमली पर जाकर देख ले।" गोलू ने बताया कि वहाँ एक लड़के का भूत रहता है। इमली तोड़ते-तोड़ते गिरकर मर गया था। दस-बारह साल पहले, फिर भूत बन गया। आज भी उसी पेड़ पर बैठा होता है और इमली तोड़ता रहता है। खा तो नहीं पाता बेचारा, सो बस इमली तोड़-तोड़कर गिराता जाता है रात-भर।

अनारको को याद आया कि तालाबवाले पेड़ के नीचे उसने हमेशा खूब सारी इमलियाँ पड़ी देखी थीं—खाई भी थीं खूब। उस पर, उसी इमली के पेड़ पर आधी रात के बाद भूत देखने की बात सोचकर उसे खूब डर लगने लगा था और बहुत मजा भी आ रहा था। उसने गोलू से एक बार फिर से पूछा, "मैं आज रात को जाऊँ तो दिख जाएगा भूत ?" गोलू ने पूरे जोर से कहा, "बिलकुल !" फिर वह घर की तरफ चल दिया।

इस बीच किंकु वहाँ से गायब हो गया और अनारको को पता भी नहीं चला। जब बाल छुए तो देखा दोनों चोटियाँ बनी हुई हैं। चोटियों की बात भूलकर अनारको भूतों के बारे में सोचने लगी और आज रात भूत देखने की योजना बनाने लगी। घर आई तो उसने जरा भी झंझट नहीं किया और शाम होते-होते पढ़ने बैठ गई। पढ़ते-पढ़ते भूत देखने की बात उसके अंदर भरने लगती। फिर वो इतना भर जाती कि उसे लगने लगता कि अभी किंकु से जाकर मिलना चाहिए। फिर वह अपने मन को दबाती और जोर-जोर से पढ़ने लगती। आज वह एक बार भी पानी पीने के लिए रसोईघर में नहीं गई। खाना खाते-खाते उसने पपीते की सब्जी देख मुँह भी नहीं बिचकाया। सोने से पहले बस्ता भी सजाकर रख दिया। पर सबकुछ ऐसे किया जैसे कोई और अनारको कर रही हो। उसके

मनवाली अनारको तो अंदर ही अंदर कुलाँचें मार रही थी। सोने गई तो झट से आँखें बंद कर लीं। आँखें बंद किए-किए अनारको को पता भी नहीं चला और वह सो गई। पता चला तब, जब बीच रात में उसकी नींद खुल गई।

चारों तरफ सन्नाटा था। अनारको ने सोचा, इतने जोर का सन्नाटा तो सिर्फ आधी रात के बाद ही हो सकता है। फिर वह बगैर आवाज किए फटाक से बिस्तर से नीचे आ गई। खूब पाँव दबा-दबाकर दरवाजे के पास गई। अब तो वह बड़ी हो गई थी, एड़ियों के सहारे तनकर खड़ी हो जाए तो चिटकनी तक हाथ पहुँच जाता था। अनारको ने हाथ से दबा-दबाकर चिटकनी नीचे की—जरा भी आवाज नहीं हुई। फिर वह धीरे से घर के बाहर हो गई। बाहर ठंडी हवा चल रही थी और अनारको के बदन में खूब सिरसिरी हुई। अनारको समझ नहीं पाई कि भूतोंवाली सिरसिरी थी या ठंडवाली। वैसी ही हालत में जल्दी-जल्दी वह पीछे की बाड़ के नीचे से बाहर निकली। फिर नाली फाँदकर सड़क पर। उधर से उसके दोस्त सूरज का बिल्ला निकल भागा कहीं से। अनारको ने गौर से देखा तो था, फिर भी एक खटका-सा लगा कि पता नहीं कोई भूत ही हो और बिल्ला बनकर आया हो!

जब तक गली में चलती रही, ठीक था। पर आगे

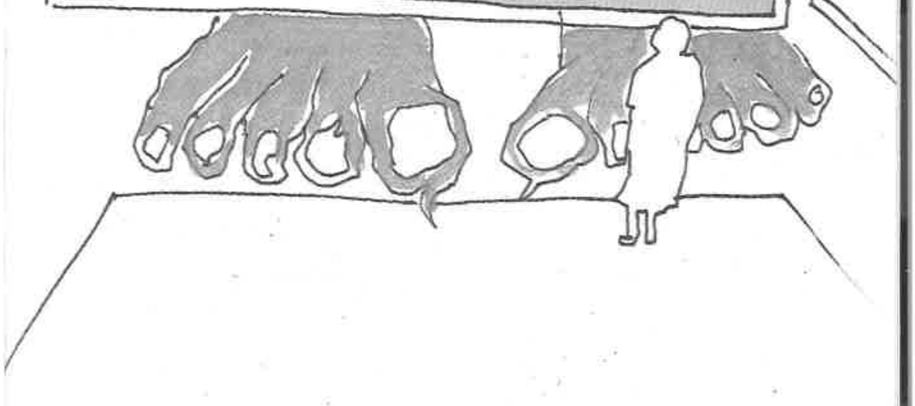
नुक्कड़ से निकलकर जैसे ही सड़क पर आई, उसे पता नहीं कैसा लगने लगा। उसे लगा कि कहीं से तो कुछ आवाज आए, लगे कि धरती जिंदा है अभी। कुछ तो लगे कि सबकुछ ठीक-ठाक है। तभी जैसे अनारको को खुश करने के लिए ही दूर कोई कुत्ता भौंक उठा। फिर चारों तरफ से कुत्ते भौंक उठे। अनारको के लिए तो समझो अँधेरी रात में दिवाली हो गई। अब वह तालाब की ओर चल दी बाएँ मुड़कर। जामुन के नीचे आते-आते आखिरी कुत्ते ने भी भौंकना बंद कर दिया था। अनारको को फिर थोड़ा-थोड़ा डर लगने लगा। तभी कही से उऽऽऽ हूऽऽऽ जैसी आवाज आई। अनारको चौंक ही रही थी कि तभी पीछे से आवाज आई—ऍंऽऽऽऽ वो! अच्छा हुआ आवाज दुबारा नहीं हुई। अनारको की मुसीबत हो जाती। सच, अनारको को कुत्तों पर जितना प्यार आज रात को आ रहा था, कभी नहीं आया था। अनारको बड़े जोश में आगे बढ़ती गई।

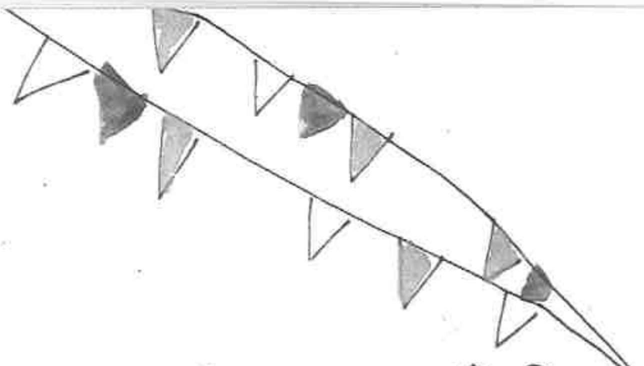
सामने इमली का पेड़ था। पेड़ पर आकर अँधेरा जैसे घना हो गया था और चुप-चुप भी। पेड़ के पास आते ही ऊपर से खेंख-खेंख- खेंऽऽख हँसी की आवाज आई। फिर कुछ डालें हिलने लगीं जोर से। अनारको ठिठक गई—उसके बदन में सिरसिरियों की तो बाढ़ आ गई थी और उसके पाँव सचमुच ठंडे होने लगे थे। थोड़ी देर

रुककर पेड़ के नीचे जाने लगी, तभी कोई चिड़िया बोल उठी—चींकी-चींकी चींऽऽऽकी चींकी ! सामने एक डाली जोर से हिलने लगी—पूरे पेड़ में सिर्फ एक डाली ! इधर-उधर इमलियाँ गिरने लगीं धूल पर । छप्प-छप्प-छप्प ! उसी बीच अनारको ने देखा, उसके सिर के ऊपरवाली डाली से दो छोटे-छोटे पाँव लटक रहे थे ! अब तक अनारको इस हालत में पहुँच गई थी कि वह कुछ भी देख-सुनने के लिए तैयार थी । फिर से आँख उठाकर देखा तो पाँव गायब थे ! अनारको अब इधर-उधर की डालियों को देखने लगी । तभी पीछे से झप्प करके कोई कूदा और अपने दोनों हाथों से कसकर उसकी आँखें ढाँप लीं । सिरसिरियों के तूफान के बीच उस अजीब पागलपन की हालत में भी अनारको ने किंकु को सूँघ लिया और झट से पीछे मुड़कर लिपट गई उससे । फिर तो वो मजा आया, वो मजा आया कि मत पूछो । अनारको बिलकुल काँप-काँप रही थी, फिर भी दोनों लिपटकर हँसते जा रहे थे, हँसते जा रहे थे । हँसते-हँसते दोनों इतने बेहाल हो गए कि वहीं धूल में बैठ गए सुस्ताने । फिर किंकु ने बताया कि वो कैसे-कैसे आकर यहाँ पेड़ पर चढ़के बैठा था । थोड़ी देर तक ये बहस चली कि कल गोलू को क्या बताया जाए । फिर गणित के मास्साब की घड़ी छुपा देने की योजना बनाई गई । तालाब से पकड़ी गई और अब

किंकु के घर बोतल में तैरती छोटी मछली के हालचाल पूछे गए । फिर दोनों ने तय किया—अब घर वापस चलना चाहिए । कुछ दूर साथ-साथ चलकर दोनों अपने रस्ते हो लिए ।

बाड़े के नीचे से अनारको बगीचे में आई ही थी कि घर की तरफ से आवाज आई, चेंऽऽऽ । एक दरवाजा खुला, उसमें से अँधेरे में झक्क-सी रोशनी गिरी और दो लंबे-लंबे पाँव बाहर निकले । सिर्फ पाँव दिख रहे थे रोशनी में । अनारको ने आँख उठाकर देखा । पापा की आँखें उसे दिख तो नहीं रही थीं, पर उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह उन्हें देख रही हो । अब अनारको को जम के डर लग रहा था । पर इस डर में कोई मजा नहीं था । सो वह मुँह लटकाकर दरवाजे की तरफ बढ़ गई ।

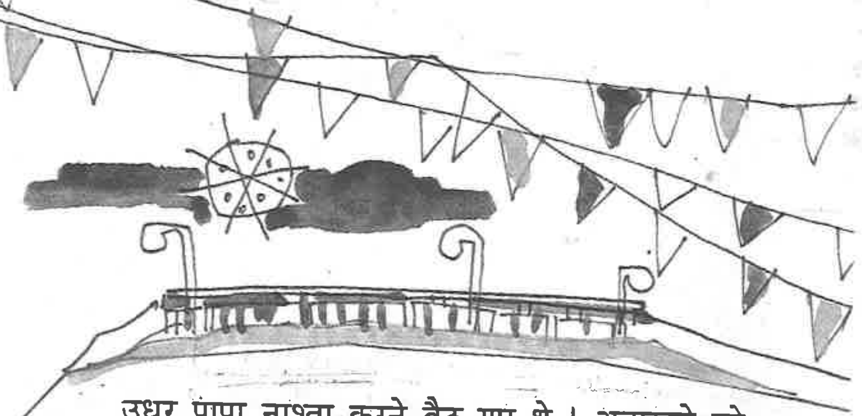




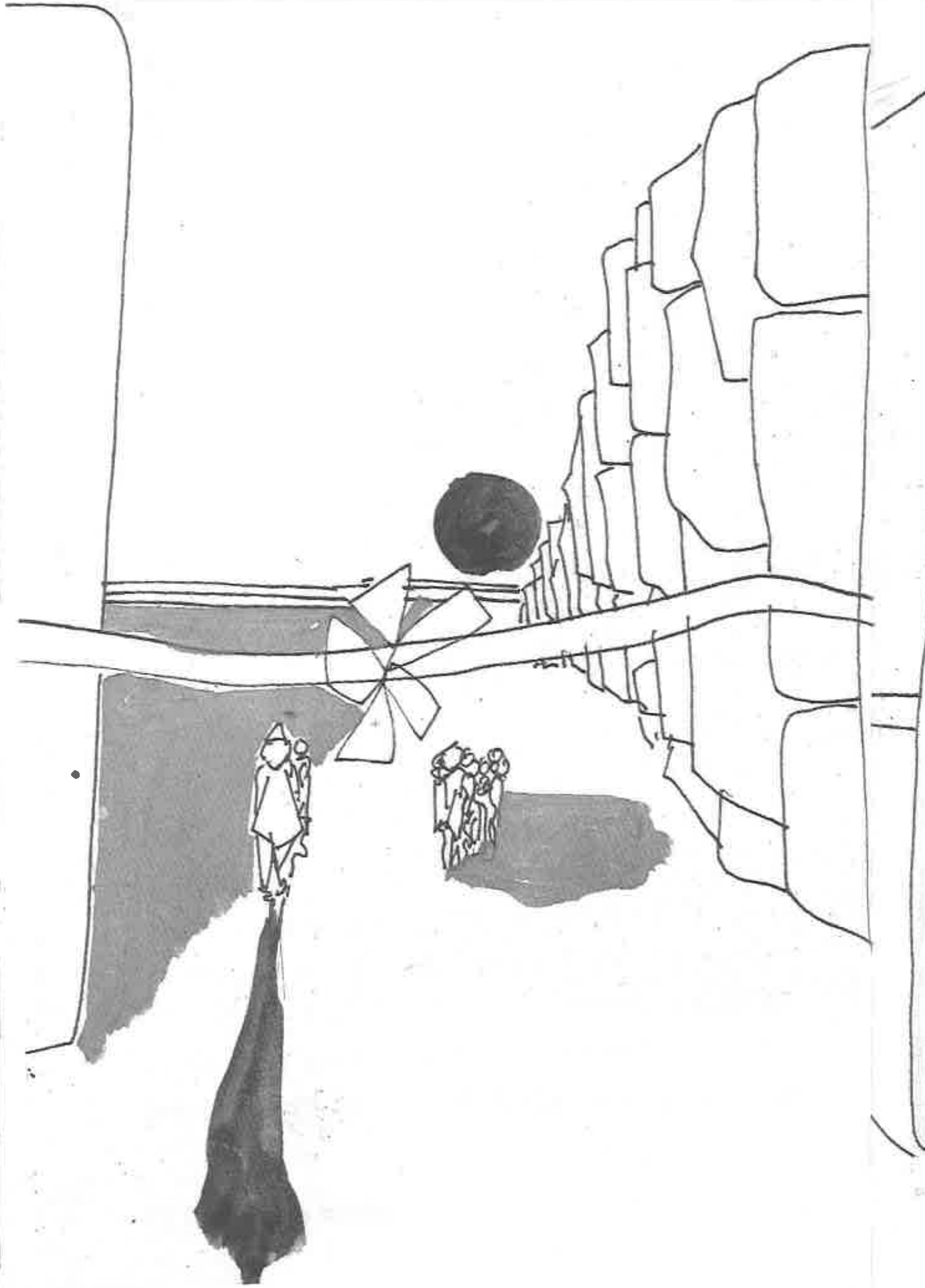
अनारको का सातवाँ दिन

आते-आते आखिर वह दिन भी आ गया । दस दिन या पता नहीं उससे भी ज्यादा दिन से अनारको सुन रही थी कि प्रधानमंत्री आ रहे हैं । जिधर देखो, सब यही बात करते थे कि प्रधानमंत्री आ रहे हैं, प्रधानमंत्री आ रहे हैं । स्कूल में मास्साब लोग आपस में, पापा अपने दोस्तों के साथ और यहाँ तक कि अम्मी के साथ भी, हलवाई की दुकान पर इकट्ठे लोग, सड़क चलते लोग—सब यही कहते थे कि प्रधानमंत्री आ रहे हैं । सब अलग-अलग तरह से बातें करते, पर सबकी आवाज में ऐसा कुछ होता था जैसे कोई बहुत बड़ी बात होनेवाली हो । पहले दो दिन तो अनारको ने इतनी बार सुन लिया कि वह बोर हो गई । फिर उसने किसी से कुछ पूछा भी नहीं उसके बारे में । बाद में भूल भी गई थी कि आज सुबह-सुबह पापा के झल्लाने की आवाज आई, ''इस घर में कुछ भी अपनी

जगह पर रखा नहीं जाता ।'' अनारको बिस्तर पर लेटी-लेटी समझ गई कि पापा अपने मोजे ढूँढ़ रहे हैं । तभी रसोईघर से अम्मी की आवाज आई, ''अभी ढूँढ़ देती हूँ मोजे ।'' अनारको समझ गई कि पापा आज सुबह-सुबह तैयार होकर बाहर निकल रहे हैं पर सुबह-सुबह झल्लाने की क्या जरूरत ? बिस्तर पर पड़े-पड़े अनारको का मन जैसे भारी हो गया । 'तो आज ही आ रहे हैं प्रधानमंत्री', अनारको ने सोचा ।



उधर पापा नाश्ता करने बैठ गए थे । अनारको को मालूम था, नाश्ता करते वक्त पापा का मूड जरा अच्छा रहता है । सो वह बिस्तर से उठकर पापा के पास जाकर बैठ गई । ''पापा प्रधानमंत्री क्यों आ रहे हैं ?'' अनारको ने पूछा । पापा ने कहा, ''पुल का उद्‌घाटन करने आ रहे हैं । उधर नदी पर पुल बना है न अभी ।'' पापा अच्छे



मूड में थे । अनारको ने फिर पूछा, "उद्घाटन क्या होता है पापा, पुल क्या प्रधानमंत्री ने बनाया है ?" पापा ने कहा, "नहीं बेटी, तूने देखा तो है, पुल मजदूरों ने बनाया है, लोगों ने बनाया है ।" इसके बाद अनारको ने धीरे से पूछा, "फिर प्रधानमंत्री क्यों आ रहे हैं उद्घाटन करने ?" पापा का मूड बदलता हुआ लगा । "क्योंकि, क्योंकि," उन्होंने कहा, "वो देश के प्रधानमंत्री हैं !"

अनारको ने वैसे ही हल्के से पूछा, "पुल बनाने के पत्थर कहाँ से आते हैं, पापा ? प्रधानमंत्री ने क्या पुल बनाने के लिए पत्थर दिए हैं ?" पापा ने अब खीझते हुए कहा, "बेटी, पत्थर पहाड़ों से आते हैं, उनको लोग काट-काटकर निकालते हैं ।" अनारको ने आगे पूछा, "फिर प्रधानमंत्री क्या पैसा देते हैं ? प्रधानमंत्री के पास पैसे कहाँ से आते हैं ?" पापा का मूड बिलकुल बदल रहा था । फिर भी कहा, "पैसे लोगों से आते हैं । लोग देते हैं सरकार को पैसे ।" अबकी बार अनारको ने जरा जोर से पूछा, "अच्छा लोग पुल बनाते हैं, पत्थर पहाड़ से आते हैं और पैसे भी लोग देते हैं, फिर पुल का उद्घाटन करने प्रधानमंत्री क्यों आ रहे हैं ?" अब पापा खीझ गए, बोले, "बताया न एक बार कि वह देश के प्रधानमंत्री हैं । कितनी बार बताना पड़ता है तुझे ? अब चल मुँह धोकर पढ़ने बैठ जा !" अनारको बिलकुल बोर हो गई । कोई

बात समझ में भी नहीं आई; ऊपर से पढ़ने भी बैठो ! खैर, जैसे-तैसे बस्ता निकालकर बैठ गई। एक-एक करके अपनी सारी किताबों का नाम पढ़ने लगी । ऐसा करते-करते स्कूल जाने का समय हो गया।

घर से निकली तो उसने सोचा, आज दूसरे रास्ते से स्कूल चलते हैं। बस ऐसे ही सोचा और चल दी बड़ी सड़क की ओर। बड़ी सड़क के किनारे लंबी-सी दीवार को कुछ लोग ऊपर से नीचे तक खुरच-खुरचकर साफ कर रहे थे। उस पर जहाँ-तहाँ जिंदाबाद, मुर्दाबाद और ऐसे ही कुछ-कुछ लिखा हुआ था—लाल-काले रंगों में। अनारको कभी-कभी सड़क चलते पढ़ लेती थी उनको। दीवार के एक किनारे थोड़ी-सी साफ जगह बची हुई थी। पता नहीं कैसे छोड़ दी थी उतनी-सी जगह लिखनेवालों ने। सो अनारको, किंकु और उसके बाकी साथियों ने मिलकर उस पर चित्र बना दिए थे पिछले दिनों। हरी पत्तियों को रगड़-रगड़कर पहाड़ बनाए थे। पहाड़ के पीछे ईंट के टुकड़े से घिस-घिस कर सूरज बनाए थे। किंकु स्कूल से चॉक उठा लाया था, सो सबने मिलकर पहाड़ से गिरता हुआ झरना बनाया था। और ऊपर, खूब ऊपर, पहाड़ से भी ऊपर, ढेर सारी चिड़ियाँ बनाई थीं। अनारको और उसके साथी जब भी उस रास्ते से चलते थे तो हमेशा अपने चित्र को देख लिया करते थे। कभी मन किया तो उसमें

जोड़ भी देते थे। कभी ऊपर बादल बना दिया तो कभी पहाड़ पर पेड़ लगा दिए और ऐसे ही कुछ-कुछ। मज़ा आता था। पर आज देखा तो खुरच-खुरचकर साफ कर रहे थे सबकुछ। अनारको को याद आया, परसों के दिन किंकु ने गणित के मास्साब का चित्र बनाया था बोर्ड पर और मास्साब की चप्पल की आवाज सुनते ही जल्दी-जल्दी मिटा दिया था डर के मारे। पर यहाँ दीवार पर लिखे हुए से क्या डरना, अनारको ने सोचा। और झरना, चिड़ियाँ, बादल—इनके चित्र से क्या डरना ! अजीब लोग हैं ! प्रधानमंत्री आ रहे हैं तो आएँ पर हमारा चित्र क्यों बिगाड़ते हो भैया ! अनारको को खूब खीझ आ रही थी। सड़क पर आगे बढ़ी तो देखा, सड़क को जैसे कलफ लगे कपड़े पहना दिए हों। किनारे-किनारे लाल मिट्टी बिछाई गई थी। उस पर चूने से सफेद लकीरें बना दी थीं, और उधर जो बिजली का खंभा टेढ़ा होकर सड़क पर माथा पटकता था, आज उसे सीधा खड़ा कर दिया गया था। अब तक अनारको को लग चुका था कि प्रधानमंत्री कोई बड़ा ताकतवाला आदमी है। गोलू होता तो कहता, "तोप है !"

ऐसे ही सोचते-सोचते अनारको स्कूल के पास आई ही थी कि उधर से किंकु दिख गया। किंकु ठीक से रुक भी पाता इसके पहले अनारको उसको बताने लगी, "मालूम है

किंकु, प्रधानमंत्री आएँगे तो कैसा होगा ? आगे से एक गाड़ी सीटी बजाती निकल जाएगी । पीछे से प्रधानमंत्री सफेद गाड़ी में जाते होंगे । प्रधानमंत्री की गाड़ी के आगे भी गाड़ियाँ और पीछे भी गाड़ियाँ । बगल में ढेर सारे मोटर साइकिलवाले । गाड़ियों में बहुत सारे बन्दूकवाले लोग चलते होंगे साथ-साथ…'' अनारको बताती ही जा रही थी कि उसने देखा, किंकु कुछ सोच रहा है । सो उसने पूछा—''किंकु, तू क्या सोच रहा है ?'' इस पर किंकु ने कहा, ''मैं ये सोच रहा हूँ कि ऐसे ही चलते-चलते कभी प्रधानमंत्री को जोर का सु-स्सू आ जाए तो क्या होगा ! सब गाड़ियाँ रुक जाती होंगी ! और मोटर साइकिलवाले, बन्दूकवाले क्या करते होंगे, जब प्रधानमंत्री सड़क किनारे सु-स्सू करते होंगे !''

अनारको अपने मन के अंदर प्रधानमंत्री को सु-स्सू करते देख ही रही थी कि स्कूल की घंटी बजी और अनारको और किंकु भागकर अपनी कक्षा की कतार में खड़े हो गए । कतार में खड़े-खड़े अनारको अपने सामने खड़ी लड़की की गर्दन के बाल देखने में मगन हो गई । उधर से बड़े मास्साब बताते जा रहे थे कि आज खाने की छुट्टी के बाद सबको घर जाकर साफ कपड़े पहनने हैं । फिर घर से फूलों की एक-एक माला लेकर स्कूल आना है । और फिर सबको सड़क किनारे खड़े रहना है और जब प्रधानमंत्री की गाड़ी उधर से निकले तो

माला अपने हाथ में हिलाना है । बड़े मास्साब बताए जा रहे थे, ''सामने देखना है सबको, सफेद गाड़ी की ओर और कोई धक्कम-धुक्की नहीं होनी चाहिए ।'' ऐसा ही होते-होते फिर प्रार्थना शुरू हो गई और अनारको फिर से सामने खड़ी बुलटन की गर्दन के बाल देखने लगी । अब तो बाल थोड़ी-थोड़ी हवा में उड़ने भी लगे थे । कैसे नरम-नरम ! प्रार्थना खत्म हुई, घंटी बजी और अनारको को पता भी नहीं चला कि वह कब कक्षा के अंदर पहुँच गई ।

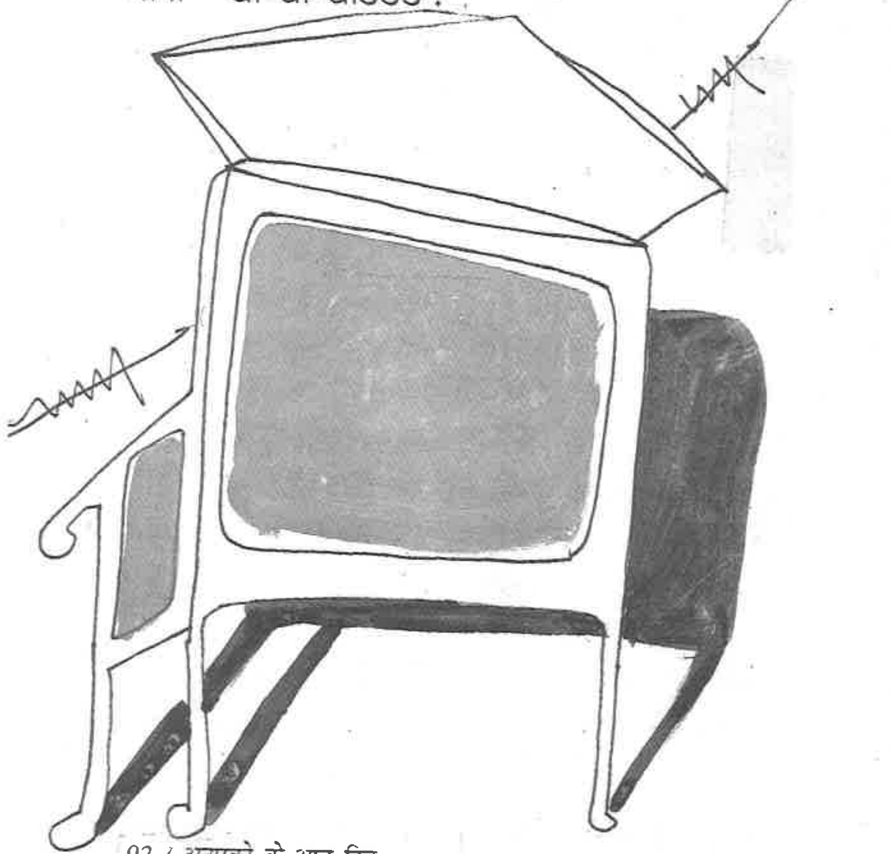
पहली घंटी गणित की थी, सो जैसे-तैसे पार लगाई । दूसरी घंटी ड्राइंग की थी । मास्साब ने पेड़ पर लटका आम बनाने को कहा और सब लोग आम बनाने में लग गए । अनारको ने बहुत कोशिश की, पर मास्साब बोर्ड पर जैसा आम बनाते थे, वैसा आम उसे कहीं भी दिखने को नहीं मिला था आज तक । फिर फुलपत्ती ने उसे समझाया था कि पेड़वाले आम और बोर्ड के आम में फर्क होता है । फुलपत्ती ने ये भी बताया था कि ड्राइंग की घंटी में बोर्डवाला आम बनाते हैं । बाकी घंटियों में भले ही कोई पेड़वाला आम बनाए पर ड्राइंगवाली घंटी में तो बोर्डवाला आम ही बनाना पड़ता है । सो अनारको कापी पर बोर्ड से लटके आम बनाने लगी । करते-करते घंटी खत्म हो गई । तीसरी घंटी सामाजिक ज्ञान की थी । सामाजिक ज्ञान उसे अच्छा लगता था, क्योंकि सामाजिक ज्ञानवाले मास्साब से

उसे डर नहीं लगता था। नाटे से थे मास्साब और उम्र भी कम थी उनकी। पर आज देखो तो उनके भी तेवर बदले हुए। आते ही पूछने लगे, "अच्छा बताओ, आज कौन आ रहे हैं अपने यहाँ ?" बस अनारको खड़ी हो गई और पूछा, "मास्साब, प्रधानमंत्री कौन होते हैं ?" मास्साब अकड़-से गए, "तुम प्रधानमंत्री नहीं जानती ? देश के प्रधानमंत्री ! अच्छा चलो बताओ, हमारे देश के प्रधानमंत्री का नाम क्या है ?" नाम तो अनारको जानती थी, लेकिन बताया नहीं। बदले में उसने पूछा, "मास्साब, प्रधानमंत्री को मेरा नाम पता है ?" इस पर तो मास्साब की अकड़ ही कम हो गई और चकरा भी गए। फिर कहा, "प्रधानमंत्री को और कोई काम नहीं कि तुम्हारा नाम याद करते फिरें···चलो बैठ जाओ।"

फिर मास्साब सबको बताने लग गए या यूँ समझो पढ़ाने लग गए। इधर अनारको सोचने लगी—'प्रधानमंत्री भी कैसा आदमी होगा ? सब लोग उसको जानते हैं और वो किसी को नहीं जानता !··· कैसा अकेला-अकेला होगा प्रधानमंत्री !' अनारको को प्रधानमंत्री पर थोड़ी-थोड़ी दया आने लगी थी। उदर मास्साब सबको बता रहे थे—सरकार-चुनाव-देश-नेता-जनता-विधानसभा··· और ऐसे ही कुछ-कुछ। अनारको समझ नहीं पा रही थी बहुत कुछ, सुन भी नहीं रही थी ठीक से। पर हाँ, उसे फिर से यह जरूर लगने लगा कि प्रधानमंत्री है कोई बड़ी ताकतवाला।

घंटी खत्म होने ही वाली थी कि दरवाजे के बाहर घंटी मारनेवाले दादा आकर खड़े हो गए। मास्साब बाहर निकले, दादा से कुछ बातचीत की, फिर लौट के आए और मेज पर से अपनी किताब उठाकर बाहर चले गए। अनारको समझ भी नहीं पाई कि यह सब क्या हो रहा है तभी घंटीवाले दादा ने अंदर आकर चिल्लाकर कहा, "प्रधानमंत्री का आना कैंसिल हो गया है। अब घर जाकर माला लाने की जरूरत नहीं है।" फिर तो वो शोर मचा कि मत पूछो। अनारको के सारे साथी शोर करते-करते खाने की घंटी बजने के साथ-साथ कक्षा से बाहर आ गए। दूसरी कक्षाओं से भी ऐसे ही शोर करते हुए और लोग निकल रहे थे। सो सामने के मैदान में सब शोर मिलकर एक बड़ा शोर बना, फिर एकदम थम गया। अनारको इस शोर में शामिल ही नहीं थी, उसका मन किसी बात पर अटका हुआ था। दीवार पर बैठे रोटी खाते-खाते उसने किंकु से कहा, "अच्छा किंकु, प्रधानमंत्री बड़ा ताकतवाला होता है न ?" बस किंकु शुरू हो गया—दीवार से उतरकर नीचे खड़ा हो गया और कहने लगा, "अरे प्रधानमंत्री होंगे तो अपने घर में। कितना ही ताकतवाला हो, मुझे कोई डर नहीं लगता। प्रधानमंत्री के बारे में बस

यही सोचता हूँ कि प्रधानमंत्री जब टट्टी करते होंगे तो नंगे होकर करते होंगे—मेरे जैसे…'' किंकु ने बोलना खत्म भी नहीं किया था और अनारको हँसने लगी । आज दिन-भर में पहली बार अनारको ऐसे हँस रही थी । हँसते-हँसते रोटी उसके गले में अटक गई और वह लोट-पोट होकर खाँसने लगी—खों-खों-खोंऽऽऽ !





अनारको का आठवाँ दिन

तुम्हें शायद यकीन न हो—आज अनारको का मन एक किताब में लग गया । पुरानी-सी थी कोई, फटी-सी और उसमें से बास भी आ रही थी । पर अनारको को तो किताब अच्छी लग रही थी—उसका पढ़ना भी, उसकी छुअन भी और उसकी बास भी । किताब थी भूगोल की । पर वो स्कूलवाली भूगोल नहीं थी, दूसरीवाली थी ।

अनारको पढ़ रही थी । अफ्रीका नाम का कोई देश था । वहाँ बहुत घने जंगल थे और खूब सारे पहाड़ । उन जंगलों में काले आदिवासी लोग रहते थे । एक साथ झुंड में रहते थे, कबीलों में । एक साथ खाते थे, पीते थे, गाते थे, नाचते थे और खूब-खूब मस्ती करते थे । वे सबकुछ बाँटते थे—खाना बाँटकर खाते थे, ठंड में बाँटकर ठिठुरते थे, और रोते थे तो बाँटकर आँसू बहाते थे । किताब में लिखा था कि एक बार एक दूसरे देश से एक आदमी वहाँ



पहुँचा। कबीले में लोगों को देखकर उसके दिमाग में एक ख्याल आया। वो गोरा आदमी अपने देश लौट गया। अबकी बार वह कुछ चमकीले औजार ले आया। लेकिन गोरा आदमी था तिकड़मी। कबीले में बावन लोग रहते थे, लेकिन गोरा आदमी सिर्फ इक्यावन औजार लेकर आया था। फिर किताब में लिखा था कि गोरे आदमी ने जब उस कबीले को इक्यावन औजार भेंट किए, और जब कबीले के लोगों ने पाया कि एक औजार कम है, कि उनमें से किसी एक को औजार नहीं मिल पाएगा तो उन्होंने सारे औजार लौटा दिए। गोरा आदमी तो सन्न रह गया, सो लौटा ले गया सारे औजार अपने देश। सच तो था, उसके देश में बाँटने का रिवाज ही नहीं था, इस तरह बाँटने के बारे में सोच ही नहीं सकते थे उसके देश के लोग, सो उस गोरे आदमी ने किताब लिख डाली।

किताब पढ़ते-पढ़ते अनारको तो बिलकुल खिल गई। पढ़ते-पढ़ते उसका ध्यान अफ्रीका चला गया। वह सोचने लगी—कैसे होंगे उस कबीले के लोग, कैसे गाने गाते होंगे, कैसे नाचते होंगे, वहाँ के बच्चे कैसे खेल खेलते होंगे, वहाँ की अम्मी लोग कैसा खाना पकाती होंगी, और वहाँ के पापा कौन-से काम पर जाते होंगे। अनारको सोचने लगी, वहाँ के अम्मी और पापा बच्चों को पीटते होंगे कि नहीं, डाँटते होंगे कि नहीं। समझो कि कबीले का कोई बच्चा

खूब सारे अमरूद खा ले और उसे खूब टट्टियाँ होने लगें तो उसकी अम्मी उसे डाँट पिलाती होंगी कि नहीं। अनारको यह सब सोच ही रही थी कि उसका बहुत मन हुआ कि वह खुद उस कबीले के लोगों से मिले। गाए-नाचे, खाए-पिए, देखे-समझे कि कैसे लोग हैं और खूब-खूब बातें करे उनसे। अनारको इतने जोर से चाहने लगी कि उसका दिल धक्-धक् करने लगा—सच्ची।

सो वह पापा के पास गई। पापा बैठकर अखबार पढ़ रहे थे, अम्मी चाय बना रही थीं। अनारको पापा के पास खड़ी हो गई और कहा, "पापा, मैं अफ्रीका जाना चाहती हूँ।" पापा ने कहा, "अच्छा, चलो अब हाथ-पाँव धो लो और पढ़ने बैठ जाओ।" अनारको समझ गई कि पापा ने सुना ही नहीं था कि वह क्या कह रही है। सो उसने अब चिल्लाकर कहा, "पापा, मैं अफ्रीका जाना चाहती हूँ।" पापा ने इस बार सुन लिया था। बोले, "तो इतना चिल्ला क्यों रही हो, क्यों जाना है अफ्रीका ?" अनारको अभी कबीले के लोगोंवाली बात आधी भी सुना नहीं पाई थी कि पापा ने उसे रोक दिया। पापा ने कहा, "तुझे मालूम भी है कहाँ है अफ्रीका—सात समुंदर पार जाना पड़ता है !"

यह बात अनारको को अच्छी नहीं लगी। अफ्रीका को सात समुंदर पार क्यों होना था। कबीले के लोगों को भी समुंदर के पार ही बसना था और वो भी सात-सात समुंदर ! कबीले



के लोग समुंदर के पार ही क्यों रहते हैं—अनारको सोचने लगी। तभी पापा पूछने लगे, "और तुझे अफ्रीका में कुछ हो गया तो ?" अनारको इस 'कुछ होने' का मतलब समझती थी। पापा-अम्मी जब 'कुछ होने' की बात करते थे तो उसका मतलब जरा गड़बड़ था—कुछ होने का मतलब जुकाम होने से लेकर मर जाने तक था। यह सब अनारको जानती थी। सो कहा, "पर पापा, कुछ तो कहीं भी हो सकता है। यहाँ भी हो सकता है, सिर्फ अफ्रीका में क्यों ?" बात सही थी और पापा अच्छे मूड में थे, सो मान गए। फिर पूछा, "अकेली कैसे जाएगी, कौन जाएगा साथ ?" अनारको ने इतना सब तो सोचा नहीं था, फिर भी कह दिया, "किंकु ने कहा है, वह भी जाएगा साथ।"

"पर जाने के पैसे कहाँ से लाएगी ? अफ्रीका तो हवाई

जहाज से जाना पड़ता है, कहाँ से लाएगी पैसे ?" पापा ने पूछा।

अनारको ने कहा, "मेरी कुंडी में हैं पैसे।" पापा फिर से अखबार पढ़ने लगे थे, सो पढ़ते-पढ़ते कहा, "तेरी कुंडी-जैसी दस हजार कुंडियाँ लगेंगी अफ्रीका जाने में।" अनारको जब समझ गई कि बहुत सारे पैसे लगेंगे अफ्रीका जाने में तो मुरझा-सी गई। फिर भी उसने सोचा, कुछ कोशिश तो करनी चाहिए।

सो वह चुपके-से घर के बाहर आ गई। उसे पता था, हलवाई की दुकान के आगे रतनमल सेठ की दुकान थी। सेठ की दुकान में कोई सामान नहीं रहता था। सिर्फ सफेद गद्दा बिछा रहता था और एक लकड़ी का बक्सा रखा रहता था और बक्से में बहुत सारा रुपया होता था। सेठ से उसकी एक-दो बार बातचीत भी हुई थी पहले। सेठ उसे जब भी देखता, मुस्कराने लगता था और उसकी आँखों में चमक आ जाती थी। जैसे अनारको कोई जोकर हो, ऐसे देखता था। फिर भी अनारको ने सोचा, जब पैसों की जरूरत है, तो उसी के पास जाते हैं। सो वह गई और कहा, "सेठजी हमें पैसे चाहिए।"

सेठ मुस्कराने लग गया। बोला, "कितने पैसे ?"

अनारको ने कहा, "बहुत सारे पैसे।" फिर कुछ सोचकर कहा, "बीस हजार रुपए !"

अब तो सेठ की आँखें भी चमकने लगी थीं। उसने कहा, "कल सवेरे आ जाना, दे देंगे।"

सेठ इतनी जल्दी तैयार हो जाएगा, यह तो अनारको ने सोचा ही नहीं था। पर अब देने को तैयार हो ही गया है तो अनारको ने कहा, "कल सवेरे क्यों, अभी दे दो न रुपए।"

सेठ ने कहा, 'अभी नहीं है, सवेरे आना।"

अनारको को अजीब लगा। पूछा, "अभी नहीं है तो सवेरे कहाँ से आ जाएगा ?"

अब सेठ हँसने लगा था। कहने लगा, "सवेरे मैं अपने रुपयोंवाले पेड़ को हिलाऊँगा न, फिर तुम्हारे लिए रुपए बटोरूँगा।"

अनारको समझ गई कि सेठ उससे मजाक कर रहा है। अब तो वह इतना हँस रहा था कि उसकी तोंद जोर-जोर से हिलने लगी थी। अनारको दुकान से निकल आई। उसे सेठ पर बहुत गुस्सा आ रहा था। थोड़ा-थोड़ा अफ्रीका पर भी—अफ्रीका को इतनी दूर क्यों होना था। फिर अनारको के मन में एक ख्याल आया। वह लौटकर सेठ के पास गई और पूछा, "अच्छा सेठजी, आप क्या चाहते हो ?" सेठ की हँसी थम गई और पूछा, "मतलब, क्या कह रही है तू ?"

अनारको ने फिर से कहा, "मैं पूछ रही हूँ, आप चाहते क्या हो, मतलब जिंदगी में क्या चाहते हो ?" अनारको के

मुँह से 'जिंदगी' शब्द सुनकर सेठ थोड़ा सन्न रह गया। वह थोड़ी देर सन्न रहा, थोड़ा सोचा और फिर कहा, "मैं तो चाहता हूँ इतवारे में अपनी बिल्डिंग बना लूँ, नीचे दुकान हो और ठाठ से धंधा चले।"

अनारको समझी नहीं कि सेठ यह सब क्या कह रहा है। "दो-तीन साल में बना लूँगा इतने रुपए और भगवान की कृपा हुई तो लग जाएगी इतवारे में दुकान, बुढ़ापा कट जाएगा आराम से।" वह कहता रहा, पर तब तक अनारको जा चुकी थी।

सड़क पर आते ही उसे फुलपत्ती का बड़ा भाई दिख गया। स्कूल से लौटते हुए अनारको ने अक्सर देखा था। फुलपत्ती का भाई नुक्कड़ पर पान खाता था और सड़कों पर थूकता था लाल-लाल। उसने देखा था कि उसकी जेब में हमेशा पैसे होते थे। अनारको ने सोचा, चलो इनको भी टटोल लें। कहा, "भैया मुझे पैसे चाहिए।" फुलपत्ती का भाई जेब में हाथ डालने ही लगा था कि अनारको ने टोका, "थोड़े-से नहीं, बहुत सारे पैसे चाहिए। बीस हजार रुपए!" इस पर भैया हँस दिए। कहा, "फिर तो बाद में दूँगा तुझे, अभी तो उतने सारे पैसे नहीं हैं।" अनारको सोचने ही लगी थी कि अभी ये भी रुपए के पेड़वाली बात करेंगे, तभी उन्होंने दूसरी बात कर दी। कहा, "मेरी नौकरी लग जाएगी, फिर आना मेरे पास।" अनारको

लौटने ही वाली थी कि उसे एक सवाल पूछने का ध्यान आया, "भैया, आप चाहते क्या हो ?" अनारको ने पूछा। भैया ने सवाल का मतलब नहीं समझा, सो अनारको ने फिर कहा, "मतलब आप चाहते क्या हो ? क्या बनना चाहते हो, क्या होना चाहते हो ?" भैया अब तक झुककर उसका मुँह देखने लग गए थे। उन्होंने कहा, "देख, मैं इतना सब तो नहीं बता सकता पर मैं यह चाहता हूँ कि मुझे एक नौकरी मिल जाए।"

इससे पहले कि भैया आगे बोल पाते, अनारको ने उनको पीठ दिखा दी। चल दी थी वह वापस घर के रास्ते। सोच रही थी कि फुलपत्ती के घर तो बहुत सारे चुनाववाले नेता लोग आते हैं, गाड़ियों में सफेद टोपी पहन के। भैया को तो मिल ही जाएगी नौकरी।

घर पहुँचते-पहुँचते अनारको ने देखा कि अँधेरा घना हो गया था। उसे ध्यान आया कि घर के कानून के मुताबिक उसे अब तक पढ़ाई के लिए बैठ जाना था। सो वह पिछवाड़े से गई और खिड़की में से हाथ डालकर पीछे का दरवाजा खोल लिया। धीरे-धीरे अंदर आई और बस्ता निकालकर भूगोल की स्कूलवाली किताब खोलकर देखने ही लगी थी कि पापा कमरे में आ गए। अनारको अब किताब को इतनी ध्यान से देखने लगी, जैसे पापा को देखा ही न हो। इतनी मगन दिखने लगी। अनारको ने कनखियों से देखा, पापा खुश लग रहे थे। सो पूछा, "पापा, आप चाहते क्या हो, क्या होना चाहते हो, क्या बनना चाहते हो ?" पापा अब अनारको के पास आ गए। उसके सिर पर हाथ रखा और कहा, "बेटी, हम तो चाहते हैं कि तू अच्छी तरह पढ़े-लिखे, इम्तहान में अच्छे नंबर आएँ तुम्हारे, कक्षा में फर्स्ट आए तू।" पर अनारको को ये सब थोड़े ही सुनना था, सो उसने फिर पूछा, "नहीं, आप अपने लिए क्या चाहते हो ?" पापा थोड़े परेशान-से लगे। कहा, "मैं तो चाहता हूँ कि मेरा प्रोमोशन हो जाए। दो साल से रुका है प्रोमोशन। प्रोमोशन हो भी जाता अब तक···" कहते-कहते पापा दफ्तर के किसी 'साले मद्रासी' को गाली देते हुए कमरे से निकल गए।

अनारको सोचने लगी—पापा का प्रोमोशन तो कभी-न-कभी हो ही जाएगा, भैया की नौकरी भी लग जाएगी, रतनमल की इतवारे में दुकान भी खुल जाएगी। सब लोग जो चाहते हैं, वह हो जाएगा। सिर्फ वह जो चाहती है, वही नहीं होगा। फिर सोचने लगी—प्रोमोशन, नौकरी, दुकान··· ये भी कोई चाहना हुआ, सब आलतू-फालतू बातें। कोई अफ्रीका जाना क्यों नहीं चाहता, जैसाकि वह खूब-खूब चाह रही थी।

फिर उसने भूगोल की किताब उठाई। स्कूलवाली नहीं, दूसरीवाली। किताब खोली और सोचने लगी—अच्छा,

कबीले के लोग क्या चाहते होंगे। सोचने लगी कि जब कबीले के लोग खूब-खूब चाहते होंगे तो क्या चाहते होंगे? सोचती रही··· सोचती रही।

